डा० अम्बेडकर

[डा० भीमराव अम्बेडकर की जीवनी]

कमल शुक्ल

दिनमान प्रकाशन
3014, वल्लीमारान, दिल्ली-110006

© लेखक

मूल्य 35 00 रुपये

प्रकाशक दिनमान प्रकाशन
3014, बल्लीमारान, दिल्ली 110006

प्रथम सस्करण 1991

आवरण जोशी

मुद्रक एस० एन० प्रिटस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

विपय-सूची

डा० अम्बेडकर

अम्बेडकर का जन्म

डॉक्टर अम्बेडकर का जन्म रत्नगिरि जिले मे हुआ था। यह स्थान इन्दौर नगर के करीब है और इस गाव का नाम मऊ है। इनके पिता रामजी राव मिलिट्री मे सूबेदार थे। उनके अब तक तेरह बच्चे हो चुके थे। अम्बेडकर चौदहवी सन्तान थे।

इनके जन्म पर खूब खुशी मनाई गई। क्योंकि रामजी राव के बहुत से बच्चे जन्म लेने के बाद ही मृत्यु को प्राप्त हो गये थे। केवल उनके दो भाई और दो बहनें थी। एक भाई का नाम आनन्द राव था और दूसरे का बसन्त राव। मजुला और तुलसी दो बहनें थी।

पडौसियो ने रामजी राव को पुत्र के जन्म पर बधाई दी। भीमाबाई को भी स्त्रियो ने बधाई दी।

पडोसी कहते कि यह बच्चा बहुत ही होनहार है। यह दुनिया मे अपना नाम करेगा। इसका ऊचा माथा बतला रहा है कि यह बहुत ही योग्य होगा।

राम जी राव यह सुनते, तो खुशी से फूले नही समाते। यह उन्नीसवी सदी का अन्त था। सन् 1888 ई० मे अम्बेडकर ने जन्म लिया। लगभग एक सप्ताह तक घर मे खुशियो का समारोह छाया रहा।

राम जी राव की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। कहने के लिए वे मिलिट्री मे सूबेदार थे, लेकिन वेतन बहुत कम मिलता था। वह तो कहो कि जमाना सस्ता था। इसीलिए गृहस्थी की गाडी किसी तरह चल जाती।

मिलिट्री की नौकरी अधिक लम्बी नही होती। अभी रामजी राव को पन्द्रह साल ही हुए थे कि वे सेवा-मुक्त कर दिये गये। नौकरी छोडकर घर आ गये और सोचने लगे कि अब उन्हे क्या करना चाहिए?

भीमाबाई भी परेशान थी। उस बेचारी की समझ में नही आ रहा था कि पति की नौकरी छूट गई है। अब घर का खर्च कैसे चलेगा और उसके लिए क्या होगा ?

रामजी राव की समझ मे जब कुछ भी नही आया, तो उन्होने मऊ गाव छोड दिया। वे वहा से सतारा आ गये और वही रहने लगे।

दिन-भर रामजी राव नौकरी के लिए भटकते लेकिन कही भी कोई जगह नही मिलती। इस तरह वे परेशान हो गये और उन्हे निराशा होने लगी कि शायद नौकरी अब नही मिलेगी।

उन्हें सतारा आये लगभग एक महीना हो चुका था। पैसे से हाथ बिलकुल खाली था। पाच बच्चे थे और पत्नी थी।

एक दिन उन्होने भीमाबाई से कहा—

"क्या हम लोग मऊ गाव ही लौट चलें ?"

'क्या ?'

"मुझे लगता है कि यहा कोई नौकरी नही मिलेगी।"

'हिम्मत हारने से काम नही चलेगा। आदमी को कोशिश पर कोशिश करनी चाहिए। कामयाबी जरूर मिलेगी। मन छोटा मत करो। भगवान पर भरोसा रखो।"

इस तरह भीमाबाई ने पति को बहुत समझाया। रामजी राव मे साहस का सचार हुआ। अब वे सवेरे घर से निकलते तो पक्का इरादा कर जाते कि आज नौकरी खोज कर ही रहेंगे। कहा जाता है कि अगर इन्सान कोशिश पर कोशिश करे तो उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नही है।

यह सत्य भी है। जब मनुष्य दृढ निश्चय कर लेता है तो उसे मजिल मिल ही जाती है और भटकना नही पडता है।

रामजी राव एक दिन एक कम्पनी मे गये। वहा के मालिक से मिले और उसे नमस्कार किया।

कम्पनी का मालिक बूढा था। उसने रामजी राव से आने का कारण पूछा, तो उन्होने बतलाया कि उन्हे नौकरी की तलाश है। वे उसी की खोज मे भटक रहे हैं।

मालिक के पूछन पर रामजी राव ने अपना सारा हाल बतलाया। उसे तरस आ गया, वह मनुष्य दयालु था। उसने रामजी राव से कहा—"तुम मिलिट्री मे सूबेदार थे। तुम्हे पचास रुपया वेतन मिलता था। उतना तो मैं नही दे पाऊगा।"

"तो फिर?"

"मैं चालीस रुपये तक दे सकता हू। देख लो, सोच लो अगर तुम्हारा काम चल सकता है तो मेरे यहा स्टोर-कीपर की जगह खाली है, मैं तुम्हें नौकरी दे दूगा।"

तब उस सस्ते जमाने म चालीस रुपये भी बहुत थे। रामजी राव ने नौकरी करना स्वीकार कर लिया। मालिक ने उनका नाम हाजिरी के रजिस्टर मे लिख लिया और वे दूसरे दिन से काम पर आने लगे।

भीमाबाई ने यह सुना, तो उसकी खुशी का ठिकाना नही रहा। वह ईश्वर को धन्यवाद देने और कहने लगी कि भगवान सबका भला करता है। वही गरीबो की सुनता है।

दूसरे दिन रामजी राव नौकरी पर जाने लगे। काम कुछ भी नही था। केवल चौकीदारी थी। वे सवेरे आठ बजे से लेकर शाम को छह बजे तक स्टूल पर बैठे रहते। दोपहर के खाने के लिए खाना साथ ले जाते।

भीमाबाई किसी तरह घर की गाडी चला रही थी। वह एक-एक दिन गिन गिनकर काटती। मन मे हमेशा यही सोचा करती कि कब महीना पूरा होगा और कब वेतन मिलेगा।

इस तरह रामजी राव गाव की दुनिया छोडकर अब शहर के ससार मे आ गये हैं। सतारा छोटा-सा शहर था, लेकिन वहा रौनक खूब थी।

इधर यह परिस्थिति थी और उधर शिशु का नाम भीमराव रख दिया गया था। वह बडा होने लगा और धीरे-धीरे पाच साल का हो गया। भीमाबाई को चिन्ता होने लगी कि अब भीमराव को पढने के लिए पाठशाला जाना चाहिए। वह पति से रोज कहती। तो उसे यही उत्तर मिलता कि मैं भी सोचता हू कि लडके को अब स्कूल भेजना चाहिए लेकिन दो समस्याए मेरे सामने हैं। पहली समस्या तो यह है कि हम लोग अछूत हैं और जाति के महार हैं। लडके का दाखिला स्कूल मे बडी कठिनाई से

होगा। यह दक्षिण भारत है। यहाँ छुआछूत का बहुत ज्यादा बोलबोला है। लोग अछूतों को नल से पानी नही लेने देते। कुए म भी जल भरने नही देत। उनसे नफरत करते हैं।

दूसरी समस्या रामजी राव ने भीमाबाई को यह बतलाई कि भीम राव के दाखिले मे रुपया भी खच होगा। खच बडी कठिनाई से चलता है, लेकिन दाखिले वाला खच जरूर करना पडेगा।

भीमाबाई का कहना था कि कुछ भी हो कि तुम सूबेदार थे और तुम्हारा बेटा बिना पढा रह जाय यह कैसे हो सकता है।

रामजी राव भीम राव को लेकर स्कूलो मे जाने लग। वे जिस भी पाठशाला म पहुचते और अपने को महार बतलाते। वही इन्कार हो जाता कि अछूत के लडके को स्कूल म भर्ती नही किया जायगा।

रामजी राव निराश होकर लौट आते, वे भीमाबाई को आकर बतलाते और कहने लगते कि भीम राव का दाखिला होना बहुत कठिन है। आज कई दिन हो गये। मैं लगातार उसको लेकर जा रहा हू, मगर कही भी कोई काम नही बनता।

भीमाबाई मे साहस था। वह निराश होने वाली स्त्री नही था। वह पति को समझाती और कहती और दूसरे स्कूलो मे जाओ। किसी-न किसी को दया आयगी। वह लडके का नाम लिख लेगा। पढना बहुत जरूरी है। अंग्रेजी सरकार यह कभी नही कहती कि अंग्रेजो को शिक्षा मत दो। उसका तो कहना है कि देश म अधिक-से-अधिक लोग पढे लिखे होने चाहिए।

रामजी राव तग आ गये थ। उन्हें रोज अपनी कम्पनी से छुट्टी लेनी पडती। व चार-पाच घण्टे देरी से पहुचते। मालिक बिगडता और कहता कि मैं रोज रोज छुट्टी नही दूगा।

लेकिन रामजी राव मजबूर थे। वे मालिक की खुशामद करते और छुट्टी लेत। उन्ह लगन लगी थी कि किसी तरह भीम राव का दाखिला स्कूल म हो जाना चाहिए।

आखिर एक दिन वे ऐसे स्कूल मे पहुचे जहा का हेडमास्टर दयालु था। उसने रामजी राव की सारी कहानी सुनी, तो कहने लगा कि दाखिला तो मैं कर लूगा लेकिन तुम महार हो, अछूत हो। तुम्हारा लडका सब

लडको के साथ बैठ नही सकता।

रामजी राव ने यह सुना, तो वे सन्नाटे मे आ गये। हेडमास्टर का मुह देखने लगे। उनकी समझ मे नही आ रहा था कि जब भीम राव लडको के साथ नही बैठेगा तो फिर पढेगा कसे ?

भीमाबाई की मृत्यु

रामजी राव ने अपनी शका हेडमास्टर के सामने रख दी। वे बोले—"जब मेरा लडका दूसरे लडको के साथ नही बैठेगा, तो फिर वह पढगा कैसे ?"

"इसका एक तरीका है ?"

"क्या ?"

"तुम्हारा लडका अपने साथ बिछाने के लिए टाट लेकर आयेगा। दरवाजे के बाहर जहा लडके अपने जूते उतारते हैं वहा वह टाट बिछाकर बैठेगा। उसे कोई छुएगा नही क्योकि वह महार है। उसे भी अच्छी तरह समझा देना कि वह भी दूसरे लडको को न छुए।'

"समझा दूगा हेडमास्टर साहब। आपकी बडी मेहरबानी है भीम राव का दाखिला कर लीजिए।"

भीम राव का नाम स्कूल मे लिख लिया गया। वे नित्य नियम से पढने के लिए जाने लगे। अपने साथ टाट ले जाते। वही बिछाकर बाहर दरवाजे के पास बैठ जाते।

लडके हसी उडाते। वे आपस मे एक-दूसरे से कहते कि यह भीम राव महार है महार। यह पढने आया है। इससे बचकर रहना। यह अछूत है, इसे कही छू मत लेना।

भीम राव पाच साल के थे लेकिन अच्छी तरह समझते थे कि लडके उनका अपमान करते हैं। मगर उनमे बहुत ज्यादा समझ थी। व सबकी

बातें सुनते और किसी को भी कुछ जवाब नही देते ।

वे खूब मन लगाकर पढते । उनकी कोशिश यही रहती कि जो आज पढाया गया है वह मुझे याद हो जाना चाहिए ।

यही कारण था कि भीम राव पढने मे तनिक भी लापरवाही नही करते । वे पढने मे तेज चलने लगे । इसीलिए अध्यापक उनसे प्रसन्न रहते । वे पाठशाला के लगभग सभी अध्यापको के प्रिय बन गये थे ।

प्रधानाध्यापक उनसे बहुत खुश रहते । वे दूसरे मास्टरो से कहते कि यह भीम राव अछूत है अछूत । लेकिन पढने मे बहुत अच्छा है । ऐसा लगता है कि यह खूब पढेगा और पढ लिखकर योग्य बनेगा ।

रामजी राव और भीमाबाई भी बहुत खुश थे । दोनो भविष्य के सुन्दर-सुन्दर सपने देखते । वे आपस मे एक-दूसरे से कहते कि हमारा भीम खूब पढेगा । उसका पढाई मे मन लग रहा है । वह बहुत ही होनहार है ।

भीम राव अब पाचवी कक्षा मे आ गये थे । गणित उनकी बहुत अच्छी थी । उसमे हमेशा पूरे नम्बर मिलते । इतिहास और भूगोल भी वे मन लगाकर याद करते । कहने का मतलब यह कि उन्हे सभी विषय पसन्द थे । वे तनिक भी लापरवाही नही करते । उनका स्कूल पाठशाला से काफी दूर था । वे सवेरे पैदल ही घर से जाते । फिर जब लौटते तो शाम हो जाती । दोपहर के लिए खाना अपने साथ ले जाते थे ।

यह सब चल रहा था । अचानक भीमाबाई की तबीयत खराब हो गई । उसे बुखार आ गया और फिर वह उतरा नही । कई दिन तक दवा नही दी गई । यह राह देखी जा रही थी कि बुखार अपने आप ही ठीक हो जायगा ।

मगर ऐसा नही हुआ । बीमारी बढ गई और पडोसियो को चिन्ता होने लगी कि यदि भीमाबाई की दवा न की गई तो वह मृत्यु को प्राप्त हो जायगी । बहुत ज्यादा कमजोर हो गई है ।

पडोसी वैद्य को बुलाने गये लेकिन उन्होंने आने से साफ इन्कार कर दिया । उनका कहना था कि मैं अछूतो के घर नही जाता और न उनका इलाज ही करता हू ।

पडोसी रामजी राव को अपने साथ लेकर जाते । सब-के-सब निराश

होकर लौट आते। कोई भी वद्य घर आने के लिए तैयार नही होता।

दुनिया मे सभी लोग पत्थरदिल नही हैं। ऐसे भी इसान हैं जिनमें हमर्ददी है और वे दूसरे का दुख अच्छी तरह समझत है। एक बूढा वैद्य था, उसे तरस आ गया। वह रामजी राव के साथ चल दिया।

वैद्य ने आकर भीमाबाई की नाडी देखी। उसने कहा कि घबडाने की कोई जरूरत नही है। मैं अच्छी-से-अच्छी दवा दूगा। बुखार ठीक हो जायेगा, लेकिन कुछ दिन का समय लगगा।

वैद्य दवा देकर चला गया। भीमाबाई को दवा दी गई। मगर उसे तनिक भी आराम नही हुआ। उसकी बीमारी बढती और बढती चली गई।

भीमाबाई लगभग एक महीन तक बीमार रही। उसके बाद उसकी मत्यु हो गई। अब रामजी राव पर दुख का पहाड टूट पडा। वे कलजा पकड कर रह गये। पत्नी का अभाव उन्ह बहुत ज्यादा खलन लगा।

वे सोचने लगे कि मैं नौकरी करूगा या घर का काम देखूगा। मेरे लिए ये दोनो ही काम कठिन हैं। या तो नौकरी कर लो, या घर का काम देख लो। दोनो काम एक साथ नहीं हो सकते।

मरता क्या न करता। रामजी राव विवश हो गये थे। वे सवरे नौकरी पर जाते और जब लौटते तो रात हो जाती। रात को वे खाना बनात। तभी सब बच्चे खाते। सवेरे के लिए वह थोडा-सा रख देत। उसे खाकर भीम राव पढने चले जाते। रामजी राव भी थोडा-सा पेट म डाल लेते। उन्हे दस घटे ड्यूटी देनी पडती।

माता की मत्यु का भीम राव को बहुत दुख हुआ। वे दिन भर उदास रहते और जब मा की याद आ जाती तो रोन लगते। राम जी राव उन्हे छाती से लगा लेते और समझाते कि सतोष करो भीम राव, अब तुम्हारी माता लौटकर नही आएगी। पढाई मे मन लगाओ। वही तुम्हार काम आयेगी।

भीम राव घर से थोडा-सा बासी खाना खाकर स्कूल जात। दोपहर को उन्ह भूख लगती तो बिलबिलाकर रह जात। एक दिन जब यह बात उन्होने अपने पिता से कही तो रामजी राव कहन लगे कि दोपहर मे

इटरवल होता है। तब तुम रोटी खाने के लिए घर चले आया करो। मैं नौकरी पर जाने से पहले तुम्हारे लिए रोटिया सेंक कर रख दूगा। भीम राव ने यह मजूर कर लिया। वे बालक थ और बचपन म भूख सही नहीं जाती।

यही कारण था कि अब भीम राव इटरवल म अपने घर जान लग। वे जब लौटते तो उन्हें लौटने मे बहुत देर हो जाती। उन पर शिक्षक बिगडत। हेडमास्टर की भी डाट उन्हें खानी पडती। मगर वे भूख से मजबूर थे। इसीलिए उन्हें रोज घर जाना पडता।

कई दिन हो गये। एक दिन हेडमास्टर ने उन्हें बहुत डाटा। उनका कहना था कि अगर तुम भविष्य म यही करोगे तो तुम्हारा नाम स्कूल से काट दिया जाएगा।

यह सुनकर भीम राव सहम गये। उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब वे इटरवल मे घर नही जायेंगे। रामजी राव को भी बतला दिया और वे भूखे रहकर पढने लगे।

दुखद जीवन

इधर मा मर गई थी। भीम राव को उसका शोक था। इधर घर की हालत अच्छी नही थी, यह उनकी समझ म नहीं आता। दिन भर भूखे रहना, यह उनके वश का नही था। वे पढना चाहते थे, इसीलिए पढ़ रहे थे। वैसे उन्हे कोई भी किसी तरह का आराम नही था।

हेडमास्टर दयालु था। उससे देखा नही जाता कि भीम राव दिन भर भूखा रहे। वह दया से भर आता। भीम राव के लिए रोटिया बनाकर रख लेता। जब स्कूल का इटरवल होता, तो वही रोटिया भीम राव को खाने के लिए देता। वह दूर स रोटी फेंक देता। दाल और सब्जी दाने मे रख देता।

वह जाति का ब्राह्मण था लेकिन उसम दया का समुद्र उमडा पड रहा था। वह भीम राव को पीने के लिए मटकी का पानी देता। भीम राव

अछूत अवश्य था, लेकिन हेडमास्टर उसे बहुत अधिक प्यार करता।

इस तरह भीम राव का अब इंटरवल मे घर जाना बिल्कुल बंद हो गया था। उन्हे प्रधानाध्यापक भोजन देते। बडे स्नेह और प्यार से खिलाते। उन्हें लग रहा था कि हेडमास्टर उनके पिता हैं और उनका पालन कर रहे हैं।

कक्षा के दूसरे छात्र भीम राव को देखकर जलते। वे आपस मे काना फूसी करते और एक-दूसरे से कहते कि हमारे हेडमास्टर साहब का भी दिमाग खराब हो गया है। एक महार को प्यार करते हैं जो अछूत है और जिसके लोटे का पानी कोई भी नही पीता।

भीम राव इन सब बातो से दूर ही नही, बहुत दूर थे। वे समाज को नही जानते और घर को भी नही पहचानते। उन्हें यही लगन लगी थी कि किसी तरह यह प्राइमरी स्कूल की शिक्षा पूरी हो जाये। तब मैं आगे बढू। किसी हाई स्कूल या इंटर कालेज मे जाकर दाखिला लू।

यही कारण था कि भीम राव अपने कानो से जो सुनते, उसे सुनकर भूल जाते। आखो से जो देखते, उसे भी भुलाने की पूरी कोशिश करते थे। उनका सिद्धान्त और वे उस पर पूरी तरह अडिग थे कि कही इधर से उधर भटक न जाए।

घर की परेशानी भी भीमराव के सामने थी। वे नित्य देखते कि उनके पिता को कितना अधिक कष्ट सहन करना पड रहा है। उन्हे माता का भी अभाव खलता। वे मन की बात किसी से भी नही कह पाते। हमेशा मौन बने रहते, यह उनकी आदत पड गई थी।

समय ने करवट बदली और युग अपनी नयी कहानी कहने लगा। रामजी राव की वह नौकरी इसलिए समाप्त हो गई क्योकि कम्पनी बन्द हो गई थी। मालिक को घाटा हुआ, उसने कम्पनी बन्द कर दी। रामजी राव भी घर पर आकर बैठ गये। वे बूढे हो गये थे। नौकरी की तलाश मे रोज जाते लेकिन उन्हे नौकरी नही मिलती।

कुछ दिन बाद भीम राव ने प्राइमरी की शिक्षा पूरी कर ली। वे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए थे। अब उन्हें हाई स्कूल मे भर्ती होना था। रामजी राव उसके लिए प्रयास करने लगे।

दाखिल के लिए रुपए की जरूरत थी और उनके पास पैसे बिल्कुल नहीं थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इसके लिए क्या करें?

देर बाद रामजी राव की समझ में आया कि वे सेठ सूरजमल से ब्याज में रुपया ले आयें। यही सोचकर वे सूरजमल की कोठी गये और उनसे रुपए की माग की।

सूरजमल ने साफ जवाब दे दिया। उनका कहना था कि मैं सोने या चादी का जेवर गिरवी रखकर ही रुपया देता हू। जेवर ले आओ, उसे गिरवी रख जाओ और रुपया ले जाओ।

रामजी राव ने अपनी बहुत मजबूरी बतलाई, लेकिन सेठ तनिक भी नहीं पसीजा।

अब रामजी राव हैरान हो गये। घर मे पीतल की एक बड़ी-सी परात थी। वे उसी को लेकर महाजन के घर पहुच गये और विनयी स्वर मे कहने लगे— 'सेठ जी, मेरे पास कोई जेवर नही है। यह परात है। इसे रख लीजिये और मुझे पचास रुपये दे दीजिये।'

सेठ जी की समझ मे आ गया। उन्होने परात देखी और फिर रामजी राव से कहने लगे—"ठीक है, मैं तुम्हे पचास रुपये अभी देता हू। लेकिन एक बात है।"

"क्या ?

"अगर एक साल के अन्दर तुमने यह परात छुडा न ली तो यह मेरी हो जाएगी।'

"कैसे ?"

"भाई, इसका रुपया और ब्याज दे देना। एक साल के अन्दर ही अन्दर इसको छुडा लेना। अगर ऐसा नही कर पाते हो, तो फिर परात हमारी हो जाएगी।"

"समझ गये सेठ जी।"

"अच्छी तरह समझ गये न।"

"हा, अच्छी तरह समझ गया।"

"तो फिर यही लिखकर मुझे दे दो और रुपया ले जाओ।"

"बहुत अच्छा।"

रामजी राव ने लिखित दे दिया और वे रुपया लेकर घर आ गय।

दूसरे दिन भीम राव का दाखिला हाई स्कूल म हो गया।

यह एल फिस्टन हाई स्कूल था। भीम राव इसी मे पढने लगे। प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर ने उनके नाम के साथ अम्बेडकर जोड दिया था। इसीलिए अब उन्हे भीम राव अम्बेडकर कहा जाता और वे लिखते भी यही।

भीम राव अपनी पढाई मे पूरी तरह व्यस्त हो गये। वे तनिक भी समय व्यथ नही जाने देते। किसी को भी नही बुलाते और न किसी के घर जात। उनके पास हमेशा समय का अभाव बना रहता और वे समय को पकडने की ही कोशिश किया करत।

एक दिन भूगोल का घटा था। अध्यापक कुर्सी पर बैठा था। उसने भीम राव को बुलाया। उसका कहना था कि भीम राव श्याम पट पर आओ। भारत का मानचित्र बनाओ।

भीम राव ने यह सुना, तो वे श्याम पट की ओर जाने लग। वही लडका का खाना डिब्बो मे रखा था। उन्होने यह देखा तो सबके सब जोर से चिल्लाये और कहने लगे कि भीम राव महार हैं। यह ब्लैक-बोर्ड की ओर जा रहा है। यह अछूत है। वही हमारा सबका खाना रखा है। यह छू लेगा। उसे नापाक कर देगा। फिर हम लोग क्या खायेगे ?

एक लडका हिम्मत करके सामने आ खडा हुआ। वह अकड कर कहने लगा—' रुक जाओ भीम राव तुम महार हो, हमारा खाना छू लोग। पहले हम अपना खाना हटा लें। उसके बाद ब्लैक-बोर्ड पर जाओ।

भीम राव रुक गये। लडको ने अपना खाना हटा दिया। उसके बाद ब्लैक बोर्ड पर गये और भारत का मानचित्र बनाया।

भीम राव को मन ही मन बहुत दुख हुआ कि वे महार है। इसीलिए कदम-कदम पर उनका अपमान होता है। उन्होने घर म भी कुछ नही कहा स्कूल मे भी किसी से कोई शिकायत नही की। सतोष करके रह गये और सोचने लगे कि उन्हे शिक्षा प्राप्त करना है। जब आदमी कोई नेक काम करने चलता है तो उसम कठिनाई ही कठिनाई आती हैं। मुझे अपने उद्देश्य को पूरा करना है। मैं किसी से भी कुछ नही कहूगा।

हेडमास्टर दयालु था। उसने एक दिन हंसकर भीम राव से कहा—"अरे भीम, तू तो महार है। तू पढ-लिखकर क्या करेगा ?"

भीम राव ने धीरे-से उत्तर दिया—"मैं छुआछूत को दूर करूंगा, पढकर वकील बनूंगा और अछूतों के लिए नया कानून बनाऊंगा जो सरकार को मानना पडेगा।"

हेडमास्टर चौंककर रह गये। उन्हें हंसी आ गई और वे भीम राव का मुंह देखने लगे। उनकी समझ में आ गया कि लडका महत्वाकांक्षी है। उन्हें भीम राव से स्नेह था। वे जानते थे कि यह लडका होनहार है। कुछ बनकर रहेगा। कुछ करके दिखलाएगा। लोग सच कहते हैं कि कमल कीचड में ही पैदा होता है और हीरा कोयले की खान से निकलता है। पुरानी बातें झूठी नहीं सब-की-सब सच्ची हैं।

उस दिन से हेडमास्टर की दृष्टि में भीम राव का स्थान बहुत ऊंचा हो गया। जो विद्यार्थी खूब मन लगाकर पढता है। उसके अध्यापक का उससे बेटे जैसा स्नेह हो जाता है। ठीक यही परिस्थिति हेडमास्टर की भी हो गई थी। वह भीम राव का अधिक-से अधिक ध्यान रखता।

परिणाम सामने आ गया। भीम राव हाई स्कूल की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। घर में खुशियां मनायी गई और यह कहा जाने लगा कि भीमराव ने हाई स्कूल पास कर लिया है। वह आगे भी इसी तरह पढेगा। फस्ट डिवीजन पास हुआ है।

बडौदा नरेश

भीम राव का एक अभिन्न मित्र था। वह जाति का ईसाई था और उसका नाम केलुस्कर था। वह हमेशा भीम राव को उदास देखता। एक दिन पूछ दिया तो भीम राव ने बतलाया कि वे आगे पढना चाहते हैं। मगर घर में पैसा नहीं है। कालेज में दाखिला कैसे लेंगे।

इस पर केलुस्कर ने बतलाया कि महाराज गायकवाड बहुत ही दयालु

पुरुष हैं। उनके दरवाजे पर जो भी गरीब पहुच जाता है वे उसकी धन स सहायता अवश्य करते हैं। तुम भी जाओ और अपनी कहानी उन्ह सुनाओ। वे रहमदिल आदमी हैं। तुम्हारे हाल पर तरस जरूर खायेंगे।

भीम राव की समझ म आ गया। बम्बई म ही बडौदा नरश की अपनी कोठी थी। भीम राव उनके सामन जाकर खडे हो गय। दोना हाथ जोड कर सिर झुकाकर उनको प्रणाम किया।

"तुम कौन हो युवक और यहा कसे आये हो?"

"राजा साहब, मैं एक गरीब विद्यार्थी हू। हाई स्कूल फर्स्ट डिवीजन म पास किया है और अब कॉलेज मे दाखिला लेना चाहता हू। घर मे पैसे नहीं हैं। पिता बहुत गरीब हैं।"

बडौदा नरेश अधेड़ थे। वे चालीस साल की उम्र का पार कर चुके थे। उन्ह दुनिया का तजुर्बा था। व आदमी को देखते ही पहचान लेत कि इसकी असलियत क्या है।

वे कई क्षण तक मौन रहे। फिर भीम राव स उसके घर का हाल पूछने लगे।

इस पर भीम राव ने अपनी कहानी शुरू स आखीर तक महाराज गायकवाड को सुना दी। बडौदा नरश का सहानुभूति हो आइ। व समझ गय थे कि भीम राव महार है और महार को शिक्षित नहीं हाना चाहिए। हमारा आज का समाज यही चाहता ह।

राजा साहब बोले—"भीम राव, म तुमस बहुत खुश हू। तुम महार हुए तो क्या? तुम एक योग्य विद्यार्थी हो। मैं समाज और दुनिया को नहा जानता। मैं तुम्हारी धन स सहायता करूगा। तुम कालेज मे दाखिला ल लो।"

भीम राव नतमस्तक हो गये। उन्होंन दोना हाथ बाध कर महाराज को प्रणाम किया।

तभी बडौदा नरश फिर कहने लग—"तुम्हे पच्चीस रुपये महीने की छात्र-वृत्ति मेरे खजान स मिलेगी। हर महीने मिलती रहेगी। जब तक तुम पढोगे।'

अब भीम राव जमीन पर झुक गये। उन्होने राजा साहब को फिर से

प्रणाम किया और उनके मुह से श्रद्धा भरा स्वर निकल गया—"महाराज गायकवाड की जय हो। बडौदा नरेश की जय हा। ईश्वर करे, यह गद्दी हमेशा आबाद रहे।"

बडौदा नरेश ने चलत समय सौ रुपये भीम राव को दिलवाय और स्नेहपूवक कहने ला—"रुपये तुम्हारे दाखिल और किताबा के लिए हैं। एक महीने बाद तुम्हें पच्चीस रुपये छात्र-वत्ति क मिल जायग। जाओ, ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे। मेरी शुभ कामनाए तुम्हारे साथ हैं।"

भीम राव आवश्यकता से अधिक श्रद्धा विभोर हा गय थ। उन्होंने एक बार राजा साहब को फिर प्रणाम किया। उन्हे आशीर्वाद मिला कि भगवान तुम्हे कामयाबी दें और तुम कुछ करके दिखलाओ।

अब भीम राव ने कॉलिज मे दाखिला ले लिया। और वे फस्ट ईयर म पढ़ने लगे। उनके पिता भी बम्बई आ गये थे। क्योंकि सतारा की नौकरी छूट चुकी थी। वे बेकार बठे थे। उनके पास कोई काम नही था। खच और पसे की समस्या हमेशा सामन बनी रहती। एक दिन भीम राव ने उनसे पूछा—"पिता जी, आप इतने दु खी क्यो हैं ?'

रामजी राव ने बतला दिया कि कमाई एक पसे कि नहीं है और खच बराबर हो रहा है। आखिर इस तरह कसे और कब तक काम चलेगा। मैं बूढा हो गया हू। अब बदन मे पहले जैसी ताकत नही है।

भीम राव कुछ देर तक तो मौन रहे। उसके बाद वे पिता से कहने लग—' मैं कॉलिज का जाना बन्द कर दूगा पिता जी।"

"क्यो ?"

'मैं नौकरी करूगा।"

"नौकरी ?"

"हा नौकरी।

' नौकरी कहा मिलेगी तुम्हे ?'

"फौज म।'

'हे।"

"हा।'

"मिलिट्री की नौकरी करोगे ?"

"आप भी तो मिलिट्री मे सूबेदार थे ?"

"क्या तुम्ह सेना की नौकरी मिल जायेगी ?"

"क्यो नही।"

"कैसे ?"

"मैं बी० ए० कर चुका हू। एम० ए० प्राइवेट कर लूगा। मैंने बी० ए० प्रथम श्रेणी मे पास किया है। इसीलिए जानता हू कि नौकरी जरूर मिल जायेगी।"

"तो जाओ बेटा। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

भीम राव ने पिता के चरण स्पश किये और वहा से चल दिये। वे सीधे सेना के भर्ती के दफ्तर मे आ गये। उनसे पूछा गया कि तुम क्या चाहत हो ?

इस पर भीम राव ने बतलाया कि वे मिलिट्री मे नौकरी करना चाहते हैं। इसीलिए आये हैं।

योग्यता मे जब इन्होने बतलाया कि वे बी० ए० प्रथम पास है। तो उनकी परीक्षा ली गई। उस परीक्षा म वे उत्तीण हो गये।

उन्हें लेफ्टीनेन्ट का पद दिया गया और यह कहा गया कि उन्ह बडौदा रियासत म भेजा जायेगा। वे उस रियासत की सेना क लेफ्टीनेन्ट हैं।

घर मे खुशी मनाई गई। रामजी राव को बहुत प्रसन्नता हुई। भीमराव ने पढना छोड दिया और वे बडौदा रियासत मे जाकर उस रियासत की सेवा करने लगे।

रामजी राव के पास रोज मगनी वाले आते। वे कहते कि अब बेटा तुम्हारा नौकरी मे लग गया है। उसकी शादी कर डालो।

जब भीम राव पढ रहे थे। तो एक बार लडकी वाले आये। रामजी राव ने मगनी पक्की कर ली। लेकिन भीम राव ने ब्याह करने से इकार कर दिया। इसीलिए मगनी टूट गई।

तब पचायत बैठी थी। उसमे रामजी राव को दोषी ठहराया गया। और उन पर सौ रुपया जुर्माना हुआ। जो उन्हे नगद ही चुकाना पडा।

यही कारण था कि रामजी राव डर रहे थे। वे किसी भी मगनी वाले से हा नहीं कहते।

भीम राव छुट्टी मे घर आये तो रामजी राव ने समझा बुझाकर उन्हें शादी के लिए राजी कर लिया।

ब्याह बम्बई मे ही पक्का हुआ था। अगले महीने ही शादी हो गई। रामाबाइ ससुराल म आ गइ। उसका स्वभाव सरल था। भीम राव उसे पाकर खुशी से फूल नही समाये। उनकी दृष्टि मे वह एक योग्य पत्नी थी।

रामा बाई को भी अपने पति पर गर्व था। वह शिक्षित था। ग्रेजुएट था और फौज मे एक ऊचे पद पर नियुक्त था।

शादी के बाद भीम राव नौकरी पर चले गये और रामा बाइ ससुराल म रहने लगी। रामजी राव को महान हर्ष की अनुभूति हो रही थी। वे अपने लिए कहते कि अब मैं सुखी हू।

रामजी राव की मृत्यु

कुछ दिन बाद रामजी राव अचानक बीमार पड गये। इलाज चलता रहा। लेकिन बीमारी बढती गई और वे चारपाई से लग गये।

जब उनकी हालत बहुत खराब हो गई तो भीम राव को तार दिया गया कि पिताजी की हालत अच्छी नही है। तार पाते ही चल आओ।

भीम राव ने तार हाथ मे लिया। वे बड़े अफसर के पास पहुच। उस तार दिखलाया और विनम्र स्वर मे कहने लगे—"साहब, मुझे छुट्टी चाहिए। मेरे पिताजी सख्त बीमार हैं। इसीलिए तार आया है।

"लेकिन तुम्हे छुट्टी अभी नही मिलेगी।'

'क्यो ?

"अभी तुम्हारी नौकरी को एक साल भी पूरा नही हुआ। इस बीच म तुम न जाने कितनी छुट्टिया ले चुके हो। अब छुट्टी नहीं मिलेगी। घर के लिए खत लिख दो।'

"खत ?"

"हा, खत।"

'मैं खत नही लिखूगा।'

'क्यो ?"

'मेरे पिता बीमार हैं। वे बूढे है। मैं उन्हे देखने जाऊगा।

"और मैंने एक बार कह दिया छुट्टी नही मिलेगी।"

"तो आप छुट्टी नही देंगे ?"

"नही।"

'तो मैं अभी त्याग-पत्र देता हू।"

'यह तुम्हारी मर्जी।"

"मुझे ऐसी नौकरी नही चाहिए। मैं अपने पिता को देखने जाऊगा। नौकरी फिर और मिल जायेगी।"

यह कहकर भीम राव ने त्याग-पत्र लिखा। अपनी वर्दी और हथियार सामने रख दिये। उनका इस्तीफा उसी समय मजूर कर लिया गया और वे घर के लिए रवाना हो गये।

घर मे आकर भीम राव ने देखा कि उनके पिता की हालत अच्छी नही है। वे मरणासन्न हैं और बहुत ज्यादा कमजोर हो गये हैं।

रामजी राव ने भीम राव को देखा। तो अपनी बन्द आखें खोल दी। उन्होंने पुत्र को पास बुलाया और उसके सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरने लगे।

अभी तक वैद्य का इलाज चल रहा था। और उससे कोई फायदा नही हुआ। भीम राव डॉक्टर ले आये उसने बीमारी की परीक्षा की। इजेक्शन लगाया और खाने की दवा दी।

कई दिन तक डॉक्टरी इलाज चलता रहा। लेकिन रामजी राव की हालत मे कोई भी सुधार नही हुआ। आखिर एक दिन उनकी मृत्यु हो गई। भीम राव के सिर पर दुख का पहाड टूट पडा। उन्हे पिता की मृत्यु का बहुत अधिक दुख हुआ। वे लगभग एक महीने तक शोक मनाते रहे। फिर उनकी समझ मे आया कि पेट पालने के लिए कुछ-न-कुछ करना जरूरी होगा। पढाई भी अधूरी रह गई और नौकरी लगी थी वह भी छूट गई। यह किस्मत का खेल है।

कलुस्कर भीम राव को समझाता। एक दिन उसने कहा कि बडौदा नरेश

न एक नयी योजना बनायी है। वे योग्य छात्रों को बुला रहे हैं। उन्हें पढ़ने के लिए अमरिका भेजेंगे। छात्र वहां जाकर ऊंची शिक्षा प्राप्त करेंगे। इसके लिए वे मासिक छात्रवृत्ति देंगे। जो हर महीने अमरिका भेजी जायगी। तुम उनके पास जाओ। उन्हें अपना सारा हाल बतलाओ व तुम्हारी मदद जरूर करेंगे। मुझे यकीन है।

भीम राव की समझ में यह बात अच्छी तरह आ गई। वह महाराज गायकवाड की कोठी में पहुंच गए। जाते ही उन्हें झुककर प्रणाम किया। महाराज ने उन्हें पहचान लिया। वे प्रसन्न होकर बोले—"कहो कैसे आये हो भीम राव? अच्छे तो हो?

'आपकी दया है महाराज।'

इसके बाद भीम राव ने वह सारी कहानी महाराज को सुना दी कि बी० ए० करने के बाद वे फौज में लेफ्टीनेन्ट हो गये थे। त्याग-पत्र दिया। पिता की मृत्यु हुई और व अब बिल्कुल बेकार हैं। उनकी पढाई अधूरी रह गई है। वे उसे पूरी करने के लिए अमेरिका जाना चाहते हैं। इसीलिए सेवा में हाजिर हुए हैं और महाराज की सहायता चाहते हैं।

महाराज गायकवाड ने भीम राव की बातें सुनी। तो उनमें दया उमड आयी। और वे प्यार से कहने लगे—'तुम अपना प्रार्थना-पत्र दे दो। साथ ही फार्म भी भर दो। मैं तुम्हें ऊंची शिक्षा पाने के लिए अमेरिका भेजूंगा। तुम्हें हर महीने छात्रवृत्ति मिलेगी और तुम अमेरिका में रहकर पढोगे।"

भीम राव अम्बेडकर ने प्रार्थना पत्र दे दिया। उन्होंने शिक्षामन्त्री के सामने शपथ ग्रहण की और प्रतिज्ञा-पत्र पर भी हस्ताक्षर किये।

प्रतिज्ञा-पत्र इस बात का था कि अमेरिका से शिक्षा प्राप्त करके लौटने के बाद दस साल तक रियासत बडोदा की सेवा करनी पडेगी।

भीम राव अम्बेडकर घर आये और जल्दी जल्दी अमेरिका जाने की तैयारी करने लगे। यह सन 1913 ई० था। जून का महीना था और तारीख चार थी। भीम राव जलपोत द्वारा बम्बई से अमेरिका के लिए रवाना हो गये।

घर में आनन्द मनाया गया और यह मंगल कामना की जाने लगी कि भीम राव सफल होकर लौटें। वे कानून पढना चाहते हैं। उनका इरादा है

कि वे बरिस्टर बनेंगे और यहा बम्बई म आकर अपनी वकालत करेंग।

सबसे अधिक खुशी रामाबाइ को हुइ। उसका कलजा हाथ भर का हो गया था कि उसका पति पढने क लिए अमेरिका गया ह। वह वहा स वकील बनकर लौटगा। फिर घर की गरीबी बिल्कुल दूर हो जायगी।

कोलबिया यूनिवर्सिटी

भीम राव अम्बेडकर अमेरिका आ गये थे। कोलबिया यूनिवर्सिटी मे उनका दाखिला हो गया। वे मन लगाकर पढने लगे। वे पालिटिकल साइस पढ़त। मौरिल फिलॉसफी पढ़ते, सोशियोलॉजी और इकोनामिक्स भी पढ़त। उन्होंन सोचा था कि वे रुपये की समस्या पर थीसिस लिखेंगे। इस पर डाक्टरट लेंगे। इसके बाद कानून पढ़ेंगे और बरिस्टर बनेंगे।

उनका मन पढाई मे खूब लग रहा था। अमेरिका उन्हें बहुत पसन्द आया। वहा छुआछूत का कोई भी भेद भाव नही था। सब लोग एक साथ बैठते एक साथ रहते, एक साथ पढते, एक साथ खेलते और एक साथ ही घूमत थे।

भीम राव अम्बेडकर को ऐसा लगा कि यह देश स्वग है। यहा सबको समान दृष्टि स देखा जाता है। कोई भी ऊच नीच, छोटा-बडा और छूत अछूत नहीं है। सभी अपन काम-से-काम रखते हैं। किसी के भी पास फुरसत नही है।

भीम राव नेअपन अमेरिकन सहपाठियो से पूछा कि यहा कोई भारतीय छात्र है या नहीं ?

इस पर लडको ने बतलाया कि बहुत से इण्डियन छात्र इस यूनिवर्सिटी म पढ़ते हैं।

भीम राव का परिचय कई भारतीय छात्रो से कराया गया। वे उनसे मिलकर बहुत खुश हुए।

होस्टल मे भीम राव ने अलग कमरा ले रखा था। वे सवेरे दैनिक कार्यो

से निवृत होने ही पढ़ने बैठ जाते। देर तक पढ़ा करते, इसके बाद कक्षा में आ जाते। दोपहर को मेस में सबके साथ बैठकर खाना खाते, उन्हें बहुत अच्छा लगता और उनका चित्त प्रसन्न हो जाता। वे सोचने लगते कि भारत भी अमरिका जैसा ही हो जाये तो सोने में सुहागा हो जाय। हमारे देश से छुआछूत का भेद भाव हमेशा हमेशा के लिए मिट जाये।

रात को भी भीम राव बहुत देर तक पढते रहते। यह देखकर उनके साथियों को आश्चर्य होता। वे फौरन ही टोक देते और कहने लगते कि भीम राव तुम बहुत ज्यादा मेहनत करते हो। दिमाग से इतना अधिक काम नहीं लेना चाहिए। इससे दिमाग कमजोर हो जाता है।

भीम राव सबको हंसकर उत्तर देते कि पढ़ने के लिए ही भारत से इतनी दूर अमेरिका आया हूं। अगर पढ़ने में मन नहीं लगाऊंगा। तो फिर सारी मेहनत बेकार हो जायेगी।

छात्र भीम राव की तारीफ करते। वे आपस में एक दूसरे से कहते कि भीम राव न जाने किस धातु का बना है। जब देखो तब उसके सामने किताब ही खुली रखी रहती है। वह किताबी कीडा है। बिल्कुल नहीं ऊबता हमेशा पढ़ता ही रहता है।

नवल भटेना से भीम राव की भेंट हो गई। यह भी भारतीय छात्र था और धनी घर का लडका था। दोनो एक-दूसरे से मिलकर बहुत खुश हुए।

नवल भटेना का कहना था कि तुम मेरे कमरे में आ जाओ दोस्त। हम लोग साथ-साथ रहेंगे और पढ़ने में एक-दूसरे की मदद करेंगे।

बस, फिर क्या था। दोनो एक ही कमरे में रहने लगे। नवल भटेना बम्बई का रहने वाला था। वह भी पढ़ने में बहुत अच्छा था। प्रोफेसर उससे खुश रहते।

अम्बेडकर ने नवल भटेना से कहा कि अमेरिका में आकर मैंने एक नया पाठ पढ़ा है। यहां सब एक हैं। कोई भी भेद भाव नहीं है। छुआछूत नहीं है और जात पात का बोलबाला नहीं है।

इस पर नवल भटेना ने कहा कि अमेरिका उन्नतिशील राष्ट्र है। यहां एक ही जाति है जिसे अमेरिकन कहते हैं। यहां सबको एक तरह से ही जीने का अधिकार है।

जव भीम राव से कोई कहता कि आज चलो फिल्म देखेंगे तो वे हस देते और उससे क्षमा मागने लगते उनका कहना होता कि भाई मैं अमेरिका में फीचर देखने नही आया है। जिस उद्देश्य को लेकर अपनी जन्म-भूमि छोडी है मुझे वह पूरा करना है। अगर मैं प्रथम श्रेणी मे पास नही होता हूँ तो यह मेरा दुर्भाग्य होगा।

छात्र चुप रह जाते। वे भीम राव का मुह देखने लगते। उन्हे ताज्जुब होता और वे चौक्कर रह जाते कि इतनी कडी मेहनत कोई भी नहीं करता है।

आखिर वह दिन भी आया। भीम राव अम्बेडकर को डॉक्टर आफ फिलासफी की उपाधि मिल गई।

छात्रो ने भीम राव को इस खुशी मे दावत दी। उन्हें बधाई दी गई। उपहार भी मिले।

अब दोस्तो ने पूछा कि आगे तुम क्या करना चाहते हो भीम राव? इस पर भीम राव अम्बेडकर ने उत्तर दिया कि वे डाक्टरेट मे उपाधि पाना चाहते हैं। रुपये कि समस्या पर थीसिस लिखेंगे। भविष्य के लिए उनका यही विचार है।

अब भीम राव का विचार यह बन गया कि वे अमेरिका छोड देंगे और थीसिस लिखने के लिए लदन मे जाकर रहेगे। वही वे कानून भी पढेगे। फिर बरिस्टर बनकर भारत जायेंगे। अपना यह सपना वे स्वीकार करेंगे। इसमे कोई सन्देह नही।

अम्बेडकर के पास बहुत-सी पुस्तकें हो गई थी। व हर विषय की नई-नई पुस्तकें बराबर खरीदते रहते थे। इसलिए एक अच्छा खासा पुस्तकालय बन गया था। उनके मित्रो ने सलाह दी कि वे अपने साथ अपना पुस्तकालय भी ले जायें। इसीलिए जब अम्बेडकर अमेरिका से इग्लैंड आये तो अपनी पुस्तकें भी साथ ले आये। वे लदन मे आकर रहने लगे। रियासत बडौदा को लिख दिया कि अब उनकी मासिक छात्र-वृत्ति लदन भेजी जाये। वे लदन मे रहकर कानून पढ रहे हैं। वे थीसिस भी लिख रहे हैं।

लदन अमेरिका जैसा नही था। वहा भारतीयो को अच्छी निगाह से

नही देखा जाता। उनके लिए कहा जाता कि ये हिन्दुस्तानी अंग्रेजो के गुलाम हैं।

अम्बेडकर इसको अपना और अपने देश का अपमान समझते थे। लेकिन उन्हें शिक्षा पूरी करनी थी। इसीलिए मौन रहते। उनका सिद्धान्त था कि जहा पर काम बिगड जाने की शका हो, वहा पर मनुष्य को मौन रहना चाहिए। एक चुप सौ बलायें टालती है। एक दिन वे सडक पर जा रहे थे। तभी एक सी० आई० डी० इस्पेक्टर ने उन्हे रोक लिया। उसने अपने सिपाहियो से कहा कि ये हिन्दुस्तानी है और जवान है। इण्डिया मे आन्दोलन चल रहा है। क्रान्तिकारी बढते चले जा रहे हैं। वे अंग्रेजी सरकार का तख्ता पलटने की कोशिश मे हैं। इसकी तलाशी लो और देखो इसके पास क्या है।

अम्बेडकर की तलाशी ली गई। उनके पास पासपोर्ट था। कोई भी ऐसी चीज नही निकली जो सन्देहजनक होती। उन्हे छोड दिया गया। वे यूनिवर्सिटी मे पढ रहे थे। अर्थशास्त्र और कानून उनके दो विषय थे।

एक दिन अम्बेडकर को रियासत बडौदा का एक पत्र मिला। वे पत्र पढकर चौंक गये। उनकी समझ मे नहीं आ रहा था कि क्या करें। वे देर तक हैरान रहे। अपने मन से ही बातें करते रहे। यह पत्र बडौदा रियासत से आया था। इसमे लिखा था कि भीम राव तुम्हे जो छात्रवृत्ति भेजी जाती थी अब उसका समय पूरा हो गया है। इसलिए तुम पढ़ाई बन्द कर दो और फौरन भारत वापस लौट आओ।

भीम राव सन्नाटे मे आ गये। उनकी पढाई अभी पूरी नहीं हुई थी। छात्रवृत्ति बन्द कर दी गई। वे परेशान हो गये कि अगर इग्लैंड मे रहेगे तो वहा का खर्च कैसे पूरा करेंगे। वहा आमदनी का उनके लिए कोई भी साधन नही था। यही सबसे बडी मजबूरी थी।

रियासत बडौदा के पत्र मे यह भी लिखा था कि तुमने जो प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं उसके अनुसार तुम्हें भारत आकर रियासत बडौदा की दस साल तक सेवा करनी है। इसलिए पत्र पाते ही भारत आ जाओ। अब छात्रवति तुम्हें नही भेजी जायेगी।

भीम राव ने बहुत सोचा, लेकिन आखिर मे वे इस नतीजे पर पहुचे कि उन्हें भारत जाना चाहिए और यह बहुत जरूरी है। महाराज गायकवाड ने उन पर बहुत उपकार किये हैं। पढाइ बन्द हो रही है, इसका दु ख अवश्य है। लेकिन कत्तव्य सबस पहल है। वे उसे पूरा करेंगे।

अम्बेडकर ने भारत जाने की तैयारी कर ली। उन्होने यहा तक सोच लिया था कि दस साल तक रियासत बडौदा की सेवा करने के बाद वे फिर लदन जायेंगे वहा जाकर वकालत पढेंगे और रुपये की समस्या पर थीसिस लिखेंगे।

अम्बेडकर ने अपनी सारी पुस्तके जलपोत द्वारा बम्बई के लिए रवाना कर दी। इसका ठेका उन्होने एक बुक कम्पनी से कर लिया था। किताबो का बीमा भी करवा दिया ताकि वे पूरी तरह सुरक्षित रहे।

अम्बेडकर जब बम्बई आ गये तो उन्हे कोई खुशी नही हुई। वे घर पहुचे। रामाबाई बहुत खुश हुइ। परिवार के लोगो को भी प्रसन्नता हुई। सबको मालूम हो गया, भीम राव की छात्रवत्ति बन्द हो गई है और अब वे दस साल तक रियासत बडौदा की सेवा करेंगे। इसलिए बम्बई मे न रह कर बडौदा मे रहेगे। वेतन रियासत से मिलेगा उसी से घर का खच चलेगा। महाराज गायकवाड उन पर बहुत दयालु हैं।

अभी अम्बेडकर को घर आये दो ही दिन हुए थ और वे बडौदा जान की तैयारी कर रहे थे। तभी उन्हें समाचार मिला कि जिस जहाज से उन्होंने अपनी पुस्तकें भारत भेजी थी, वह जहाज समुद्र मे डूब गया है।

भीम राव को बहुत दु ख हुआ। वे कलेजा पकडकर रह गये। रामाबाई ने यह सुना, तो वह जोर-जोर से रोने लगी।

रामाबाई का रोना सुनकर पडोस के लोग और औरतें आ गयी।

मबने रोने का कारण समझा और सहानुभूति करन लगे। अम्बेडकर के दु ख की सीमा नही थी। वे सोचने लगे कि इस समय भाग्य उनका साथ नही दे रहा है।

तभी लदन की पढाई अधूरी रह गयी और उन्हे भारत आना पडा। तभी उनकी छात्रवृति बन्द हो गयी और अब किताबो का जहाज भी समुद्र म डूब गया है। इस ही होनहार कहते हैं। यही होनी है और होनी बलवान होती ह।

अम्बेडकर का हाथ बिल्कुल खाली था। वे रामाबाई से कहन लग कि मुझ बडादा जान के लिए रुपया चाहिए वतन एक महीने बाद मिलेगा। तब तक काम कैसे चलेगा? घर के खच के लिए भी रुपये चाहिए।

इस पर रामाबाई ने अपन गले से सोने का हार उतार दिया और वह पति को दती हुई कहने लगी—"इस हार को गिरवी रख दो। तुम्हारा काम चल जायगा और घर की भी गाडी चलती रहगी। जब रुपये इकट्ठे हो जाय तो छुडा लेना। इस बीच मे ब्याज जरूर देना पडेगा।"

भीम राव न हार नही लिया। वे रामाबाई से कहने लगे—"मैं वह मर्द नही हू जो औरत का जेवर बेचू या गिरवी रखू।"

"आखिर इसमे हर्ज ही क्या है?"

"हर्ज बहुत बडा है।

'क्या?'

"मैं यह अधम करूगा। मैं यह पाप करूगा। मुझे भगवान का भरोसा ह रामाबाई। मेरी मदद वही करेगा।"

अभी दम्पति म बातें हो ही रही थी कि तब तक बाहर पोस्टमन ने आवाज दी। भीम राव ने जाकर पूछा तो उसने बतलाया कि मनीआडर लाया है। टोमस बुक कम्पनी ने दो हजार रुपये का मनीआडर भेजा है।

भीम राव चौककर रह गये। उनके अचरज का ठिकाना नही रहा। डाकिया साथ म एक पत्र भी लाया था। उसमे लिखा था कि तुम्हारी पुस्तकें जिस जहाज पर आ रही थीं। वह समुद्र मे डूब गया है। लेकिन उन पुस्तकों का बीमा था इसीलिए मुआवजा तुम्हें भेजा जा रहा है। ये दो हजार रुपये हैं। ये तुम्हारे मुआवजे की रकम है।

अम्बेडकर खुशी से फूले नही समा रहे थे। उनकी समझ मे अच्छी तरह आ गया कि इस समय भगवान ने ही उनकी सहायता की है। जिसके पास एक पैसा न हो और उसे दो हजार रुपये मिल जायें। यह किस्मत का खेल नही तो और क्या है।

भीम राव ने रुपये लाकर रामाबाई के हाथ मे रख दिये। उनका कहना था कि इसमे से पाच सौ मैं अपने साथ बडौदा ले जाऊगा। पन्द्रह सौ तुम्हें देता हू। उन्हें सभाल कर रखना और घर का खर्च चलाना।

रामाबाई ईश्वर को धन्यवाद देने लगी और मन-ही-मन गर्व भी करने लगी कि उसका पति बडा भाग्यशाली है। वह उसका पूरा-पूरा साथ दे रहा है। वह रियासत बडौदा मे जाकर राज्य की सेवा करेगा। वह धन कमायेगा।

उस समय महाराज गायकवाड बडौदा मे ही थे, वे कम-से-कम बम्बई मे प्रवास करते। वैसे अधिकाश बडौदा मे ही रहते थे।

अम्बेडकर ने आने वाले ही दिन राजा साहब के पास सूचना भेज दी थी कि अमुक तिथि को वे बडौदा आ रहे हैं।

महाराज गायकवाड भीम राव पर बहुत प्रसन्न थे। उन्होने अपने कर्मचारियो को आज्ञा दी कि डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर बम्बई से बडौदा आ रहे हैं। उनका स्वागत करने के लिए सब लोग स्टेशन पर पहुचो और फूल मालायें पहना कर हर्ष ध्वनि करते हुए यहा लाओ। वह बहुत योग्य आदमी है।

इस पर सभी अधिकारियो और कर्मचारियो ने आपस मे परामर्श किया कि हम लोग ऊची जाति के होकर एक महार का जाकर स्वागत करें। यह हमारा अपमान है। हम अछूत को इतना अधिक महत्व नहीं दे सकते।

अन्त मे यह निश्चय किया गया कि कोई भी भीम राव अम्बेडकर को लेने स्टेशन नही जायेगा।

भीम राव अम्बेडकर को यह कुछ भी मालूम नही था। वे स्टेशन पर उतरे और पैदल ही राजमहल की ओर चल दिये।

उनमे श्रद्धा उमडी पड रही थी और वे सोच रहे थे कि महाराज

गायकवाड के दर्शन करके वे अपने को धन्य समझेंगे। रियासत की सेवा के लिए राजा साहब जो आज्ञा देंगे वे सहर्ष उसे स्वीकार करेंगे। इसमे उन्हें महान खुशी होगी।

भीम राव अम्बेडकर जैसे ही महाराज के सामने पहुचे। उन्होंने दोना हाथ बाध और सिर झुकाकर महाराज को प्रणाम किया।

"आयुष्मान हो भीम राव। कहो, अच्छी तरह तो रहे?"

'सब आपकी दया है और आपका आशीर्वाद है।"

"कहो, अमेरिका कैसा लगा?"

"वह मेरा देश तो नहीं, लेकिन अच्छा है।"

'और इग्लैंड?"

"इग्लैंड हमे अपना गुलाम समझता है। इसलिए अमेरिका और उसमे फर्क है।'

"बहुत अच्छे भीम राव। इससे यह साबित होता है कि तुम्हें अपने देश से बहुत प्रेम है और तुम एक सच्चे देशभक्त हो।'

भीम राव मौन रहे। महाराज आगे फिर कहने लगे—"अब तुम अपने रहने का प्रबन्ध किसी जगह कर लो। क्योकि तुम्हे दस साल तक बडौदा मे रहना है। रियासत की सेवा करनी है। तुम रियासत की सेवा करोगे और मैं तुम्हारा विशेष ध्यान रखूगा।'

'यह कहने की आवश्यकता नही है महाराज। मैं आपको अपना पिता समझता हू। आप पर मुझे पूरा भरोसा है। आपने मुझे इसान बनाया है। आपने मेरे साथ उपकार पर उपकार किये हैं। मैं आपसे कभी उद्धार नही हो सकता। मुझे आशीर्वाद दीजिये।"

"तुम सूरज की तरह चमकोगे भीम राव। मेरा यही आशीर्वाद है।"

सेवा और अपमान

भीमराव को रियासत बडौदा मे बहुत ऊचे पद पर नियुक्त किया गया था। वे सैन्य-सचिव के पद पर नियुक्त हुए थे। तब उनका वेतन दो हजार रुपये मासिक था। वे भूत की तरह काम करते। सोते नही, विश्राम नही करते। अठारह घण्टे शैतान बनकर काम करते।

इनकी सेवा से पूरी की पूरी रियासत बहुत खुश थी। लोग यही कहते कि जब से यह नया सैन्य-सचिव आया है तब से सेना में एक नयी जिन्दगी आ गई है और लोग अपने को पहचान गये हैं।

लेकिन जब नदी की धारा बहती है तो रास्ते मे रुकावट भी आती और उसी के लिए कहा जाता कि यह बाधा है, या अडचन है।

इधर तो भीम राव तन-मन से रियासत बडौदा की सेवा कर रहे थे और उधर समाज छोटे विचारो का था। उसके रास्ते तग थे, उसकी मान्यतायें सीमित थी। वह यही कहता कि खुद इसान नही हैवान है। भीम राव महार है महार।

भीम राव सैन्य-सचिव की कुर्सी पर जाकर बैठते। उन्हें ऊचे-से-ऊचे अधिकार प्राप्त थे। लेकिन वे देखते कि चपरासी उनकी मेज पर दूर से फाइल फेंककर चला जाता है।

ऐसे ही जो दूसरा चपरासी फाइल वापस लेने आता, वह दूर से मागता है।

डाक्टर भीम राव अम्बेडकर बच्चे नही जवान थे। भारत मे पढ़े। अमेरिका मे ऊची शिक्षा पाई। लदन मे भी पढते रहे और अब इतनी बडी रियासत बडौदा मे सैन्य-सचिव नियुक्त हो गये थे।

वे सब समझते थे कि महार होने के नाते ही उनका यह तिरस्कार हो रहा है। अगर वे अछूत न होते तो उन्हे श्रद्धा-ही-श्रद्धा मिलती। वे सिर-आखो पर बैठा लिये जाते और उनकी आरती उतारी जाती।

दिन पर-दिन बीतते चले जा रहे थे और भीम राव इन बातो पर कभी ध्यान नहीं देते।

उनके सामने एक ही धुन थी, एक ही लगन और एक ही टेक कि मैं

अछूतों का उद्धार करूंगा। मैं दस साल तक रियासत बड़ौदा की सेवा करके फिर उच्च शिक्षा प्राप्त करूंगा। मैं रुपये पर थीसिस लिखूंगा, उस पर मुझे डाक्टरेट मिलेगी। मैं कानून पढ़ूंगा और फिर लंदन से बरिस्टर बनकर भारत आऊंगा।

इस तरह गाड़ी चल रही थी। दिन जा रहे थे और रातें आ रही थी। रोज सवेरे सुबह आ जाती। वह जिन्दगी का नया पैगाम लाती।

और फिर ऐसे ही आ जाती शाम।

हर सास कहती है कि तुम्हारा दीपक बुझ चुका है अब नया चिराग जलाओ। तुम्हारी नयी जिन्दगी यही से आरम्भ होती है। तुम नयी मंजिल अपनाओ।

एक दिन अम्बेडकर ने एक चपरासी से कहा—"एक गिलास ठण्डा पानी पिलाओ चपरासी। बड़ी जोर की प्यास लगी है।"

"सर, पानी ?

"हां, पानी।'

"मगर यहां कोई पानी पिलाने वाला नहीं है।'

"ऍं।"

"हां।"

'तो क्या यहां पानी पिलाने का कोई भी प्रबन्ध नहीं है ?"

"है।"

"तो फिर मुझे पानी चाहिए।"

"मगर आपको पानी नहीं मिलेगा बाबू साहब।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि आप अछूत हैं।

"ऍं।"

"हां बाबू जी। शूद्रों को पानी पिलाने के लिए हमारे दफ्तर में कोई भी प्रबन्ध नहीं है।'

"मैं शूद्र हूं ?"

"क्षमा कीजिए बाबू जी आप शूद्र हैं।"

"तो क्या मैं इंसान नहीं हूं ?"

"आप इसान हैं लेकिन छोटी जाति के।"

"छोटी जाति के ?"

"हा, छोटी जाति के।"

"यह छोटी जाति क्या होती है ?"

"जैसे आप महार हैं।"

"ऐं तो यह बात है ?"

"आप देर से समझे बाबू जी। बात यही है।'

"क्या ?"

"न तो आपको कोई छूयेगा और न आपको कोई पानी पिलायेगा।"

"तो क्या मैं इस्तीफा दे दू ?"

"यह आपकी मर्जी।"

"मेरी मर्जी ?"

"हा, आपकी मर्जी।"

भीम राव अम्बेडकर ने चपरासी की बातें सुनी तो वे पूरी तरह सन्नाटे मे आ गये। लगा कि बम्बई से ज्यादा यहा रियासत बडौदा मे छुआछूत का बोल-बाला है। महार की कोई इज्जत नही है और उसे इसान नही कहा जाता।

भीम राव अम्बेडकर बहुत दिन तक यही सोचते रहे कि उन्हे रियासत बडौदा की सेवा करनी है। उन्होंने प्रतिज्ञा-पत्र पर जो हस्ताक्षर किये हैं। इस तरह उन्हें अपने वचन का पालन करना है। वे कर्त्तव्य को पूरा कर रहे हैं। इसीलिए इसमे बाधाओ पर बाधायें आती। जमाना उनकी परीक्षा ले रहा है। समय अपनी कसौटी पर कस रहा है। उनका भाग्य साथ नहीं देता। वे आसमान पर चढ जाते। फिर वहा से गिरते तो खजूर पर अटक जाते। वे समझ नही पा रहे थे कि नौकरी से त्याग-पत्र दे दें या करते रह।

ऐसा लगता था कि वे किसी जगल से पकड कर लाये गये हैं और इसान नहीं हैं। उन्हें इसानियत सिखलाई जा रही है जो उनके लिए बहुत महगी पड रही है।

सीखता है वह इसान जो गलतियो पर गलतिया करता है। समझता है वह इसान जो मन मे धीरज रखता और सोचता है, वह इसान जिसे कुछ

भी करना नही होता।

भीम राव मेस मे खाना खाने जाते तो कोई भी उन्ह अपने पास नही बठने देता। सब यही कहते कि यह महार है।

इस तरह भीमराव को दफ्तर मे और दफ्तर के बाहर भी पूरी तरह अपमानित होना पडता। सब लोग यह भी कहन लगे थे कि बडोदा नरश ने जो नया सैन्य-सचिव नियुक्त किया है वह जाति का महार है। उसका छुआ कोइ भी पानी नही पीता।

रियासत की प्रजा मे हलचल मच गई थी और लोग एक दूसरे से कहने लग थे कि राजा साहब ने अधेर मचा रखा है अधर। एक महार को सेना के ऊचे पद पर बैठा दिया। क्या यह उनकी समझदारी है?

भीमराव यह सारी बातें सुनते। मगर उन पर इनका कोई भी प्रभाव नही पडता। वे एक कान से सुनते और दूसरे कान से सब निकाल देत। उनका सिद्धात था कि हाथी अपनी राह पर चला जा रहा है। उसके गले मे बधा घण्टा बज रहा है। कुत्ते व्यथ के लिए भौंक रहे हैं। वे अपना गला फाड रहे हैं।

मस्त हाथी चला जा रहा है। ऐसे ही थे, हमारे भीम राव अम्बेडकर।

उनका कहना था कि आधी हो या तूफान इसान को झुकना नही चाहिए। अगर वह चलता रहेगा तो मजिल अपने आप ही सामने आती चली जायेगी। जिन्दगी के जागरण की यही कहानी है। बाकी इतिहास तो सोया रहता।

हमे जब मुर्दों से मुलाकात करनी होती है ता इतिहास पढत हैं। भूगोल के ज्ञान की जरूरत नही पडती। वह परिस्थितिया अपने आप ही करा देती हैं।

वतमान की शिकायत समाज नही सुनता। वह अपनी राह पर चलता चला जाता है।

जमाना रुकता है जमाना ठहरता है और जमाना वतमान के घुघरू खोल भविष्य की पायल बाधकर नाचता है। वही हमारी जिन्दगी का नया अध्याय होता है।

।

सेना के पद का त्याग

भीम राव को कही भी रहने के लिए जगह नही मिल रही थी। वे बहुत ज्यादा परेशान थे। आखिर वे एक पारसी सराय मे गये और वहा किराये पर एक कमरा ले लिया।

वहा कुछ दिन तक तो लोग नही समझ पाये कि भीम राव महार हैं। जब इस बात का पता चला तो सब बहुत बिगडे। पूरी सराय के लोग इकट्ठे हो गये। वे भीम राव को पीटने के लिए तैयार थे।

उनका कहना था कि जब तुम महार हो, तो फिर हमारी सराय मे क्यो आये? तुमने सबको अछूत कर डाला। फौरन ही यहा से चले जाओ, वरना तुम्हारी हड्डी पसली तोड दी जायेगी।

भीम राव ने अपनी मजबूरी बतलाई फिर वे सबसे विनम्र स्वर मे कहने लगे—"मैं आप लोगो से क्षमा मागता हू। अभी कमरा खाली किये देता हू और फिर कभी इस सराय मे नही आऊगा।"

सब लोगो ने कहा कि हा जल्दी-से-जल्दी कमरा खाली कर दो। तुमने बहुत गलत काम किया है। एक अछूत होकर सबके बीच म घुस आये।

भीमराव ने सराय खाली कर दी। वे बहुत दुखी हो गये थे। उन्होंने बडौदा नरेश के नाम एक पत्र लिखा। उसमे यह लिखा था कि प्रतिज्ञा-पत्र के अनुसार मैं दस साल तक रियासत बडौदा की सेवा करना चाहता हू मगर यहा मेरे रहने का कोई भी प्रबन्ध नही हो रहा है। जहा भी जाता, हू लोग दुत्कार कर भगा देते हैं और कहने लगते हैं कि तुम अछूत हो, तुम महार हो।

दफ्तर का यह हाल है कि चपरासी मुझे नही छूते। वे दूर से फाइल फेंककर भाग जाते हैं। उनसे पानी पिलाने के लिए कहो तो जवाब देते हैं कि यहा कोई भी पानी पिलाने वाला नही है। अपना पानी साथ लाया करो। इस तरह मैं यहा कसे रहूगा और रियासत की सेवा किस तरह करूगा?

डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर ने वह पत्र ले जाकर राजा साहब के हाथ मे दे दिया। राजा साहब ने पत्र पढा तो वे सन्नाटे मे आ गये और भीम

राव का मुह देखने लगे ।

कुछ देर तक सोचते रहने के बाद बडौदा नरेश ने कहा—"तुम रियासत के दीवान के पास जाओ भीम राव । वे तुम्हारे रहने की व्यवस्था कर देंगे और चपरासियों को भी समझा देंगे । मैं उन्हें एक पत्र लिखे देता हू । वह भी साथ लेते जाओ ।"

"जो आज्ञा महाराज ।"

यह कहकर भीम राव ने पत्र ले लिया और वे रियासत दीवान के पास चल दिये ।

रियासत दीवान ने भीमराव की पूरी कहानी सुनी । उसने राजा साहब का भी पत्र पढा । इसके बाद भीम राव से बोला—"तुम्हारी समस्या बहुत जटिल है भीम राव ।"

"आप मेरी सहायता कीजिए ।"

"मैं सबको नाराज करके तुम्हारी सहायता नही कर सकता । '

"हूँ ।"

"हा भीम राव, तुम्ही सोचो कि तुम जाति के महार हो तुम्हें पानी कौन पिलायेगा ।"

' पानी मैं खुद पी लूगा, लेकिन रहने का इतजाम होना चाहिए । '

"एक महार को रहने के लिए कोई भी जगह नही देगा ।

"तो फिर मैं क्या करू ?'

'मुझे अफसोस है । वैसे मेरी हमदर्दी तुम्हारे साथ है । मगर मजबूरी यह है कि समाज मे रहकर समाज के साथ चलना पडता है । तुमने राजा साहब से कहा वे तुम पर दयालु हैं । उन्होने तुम्हे मेरे पास भेज दिया, जो होना चाहिए था । मैं तुमसे एक बात पूछता हू ।"

"क्या ?"

"अगर तुम मेरी जगह पर होते तो इस मामले मे क्या करते ?"

डाक्टर भीम राव अम्बडकर इस बात का कुछ भी जवाब नही दे पाये । वे रियासत दीवान का मुह देखने लगे ।

तब रियासत दीवान ने आगे फिर कहा—"अगर समाज बीच मे न होता, तो मैं तुम्हारी पूरी मदद करता । मैं मजबूर हू । राजा साहब को

लिसे देता हूँ कि यह छुआछूत का मामला है। इसमे दखल देकर मैं अपने अपमान नही करवाऊगा।"

भीम राव अम्बेडकर की समझ मे बिल्कुल नही आया। उन्होंने वह त्याग पत्र लिखा और रियासत दीवान को दे दिया।

अब अम्बेडकर सोचने लगे कि मुझे बम्बई चलना चाहिए। वहां परिवार के लोग हैं। जैसी सबकी राय होगी मैं वही करूगा।

भीम राव को सोचने और करने म देर नही लगती। वे बम्बई के लिए रवाना हो गये। उन्हे सतोष था कि वे रियासत बडौदा की सेवा करने के लिए आये थे। उनकी योजना थी कि यहां दस साल तक रहेंगे। मगर यहा की परिस्थिति और समाज उनके अनुकूल नही था। उन्होंने रियासत दीवान को बतला दिया है। उसने भी अपनी मजबूरी बतलाई। इसीलिए त्याग पत्र दे दिया। इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता नही था।

घर के लोग इस पक्ष म नही थे कि भीम राव दस साल तक बडौदा मे रहें। उनके दोस्तो की भी राय नही थी, लेकिन उन्होने प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। इसीलिए रियासत की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझते थे।

भीम राव बम्बई आ गये। उन्होंने रामाबाई को सब हाल बतलाया घर मे खलबली मच गई कि भीम राव की नौकरी छूट गई है। वहा छुआछूत बहुत ज्यादा थी। इसीलिए उन्होंने इस्तीफा दे दिया है।

कॉलेज की नौकरी

भीम राव अम्बेडकर का सच्चा दोस्त केलुस्कर था। उसकी मित्रता ऐसी थी जैसे लोटे के गले मे डोर बाध कर कुए से पानी भरा जाता है। वह यही चाहता था कि भीम राव ऊची-से-ऊची शिक्षा प्राप्त करे। वह ऊचे पद पद पर नौकरी करे और खूब धन कमाये।

केलुस्कर को जब यह सारा हाल मालूम हुआ तो उसने भीम राव

के कधे पर हाथ रख दिया और हिम्मत बधाता हुआ हमदर्दी के साथ बोला—' दोस्त, निराश होने की कोई जरूरत नहीं है। तुम्हारे ठोकर पर-ठोकर लग रही है। इसका मतलब यह हुआ कि जल्दी ही तुम्हार अच्छे दिन आने वाले हैं। मैंने सुना था और आज अखबार म भी पढा है।'

"क्या ?"

"बम्बई कॉलेज म एक प्रोफेसर की जगह खाली है।"

"ए !"

"हा दोस्त वहा के लिए प्रार्थना-पत्र दे दो। इसके अलावा एक काम और करो।'

' वह क्या ?"

' प्रार्थना पत्र देने के साथ ही प्रिंसिपल से मिल लो। यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा रहेगा।'

भीम राव अम्बेडकर कलुस्कर की ओर देखने लगे।

तभी केलुस्कर के मुह से फिर निकल गया—"घबडाते क्या हो ? मैं तुम्हारे साथ चलूगा मुझे यकीन है कि वह जगह तुम्हे मिल जाएगी।'

दूसरे दिन दोनो मित्र बम्बई कॉलेज मे पहुचे। भीम राव ने प्रार्थना-पत्र दिया। भाग्य उनके अनुकूल था। उसी समय इटरव्यू हो गया। उसमे वे पास हो गए। और उन्हे प्रोफेसर की नौकरी मिल गई।

कलुस्कर को बहुत खुशी हुई। उसने मित्र को बधाई दी।

डॉ० भीम राव अम्बेडकर बम्बई कालेज म अर्थशास्त्र और राजनीति के प्रोफेसर चुने गए थे। दूसरे दिन से ही वे पढाने लगे। छात्र उनकी पढाई से बहुत खुश हुए। वे परस्पर एक-दूसरे से कहने लगे कि यह प्रोफेसर महार है लेकिन बहुत काबिल है। यह इग्लण्ड और अमरिका म पढा है। इसम योग्यता ही योग्यता है। इसके पढाने का ढग बहुत अच्छा है।

एक दिन भीम राव ने मिट्टी के घडे म रखा पानी गिलास भर कर ले लिया और उसे पीने लगे। तभी एक गुजराती प्रोफेसर ने आकर उन्हें टोक दिया।

वह लाल पीला होकर कहने लगा—"तुम महार हो। तुम्हें मिट्टी का घडा नही छूना चाहिए। जब अछूत हो तो किसी से माग लेते।

अम्बेडकर के पास कोई जवाब नही था। वे चुपचाप खडे थे। इतने मे और भी कई प्रोफेसर वहा आ गए। वे सब अम्बेडकर पर बिगडने लगे। घडा उठाकर फोड दिया गया और अम्बेडकर से कहा गया कि भविष्य मे अपने पीने के लिए पानी साथ लाना। घडा छूने की कोई जरूरत नही है और मांगने पर कोई भी चपरासी पानी नही देगा।

आखिर भीम राव हार गए। उन्होंने सभी प्रोफेसरो से माफी मागी। यह कहा कि आज से मैं घडा नही छूऊगा। अपने साथ पानी लाऊगा।

घर जाकर भीम राव ने सोचा कि ऐसी नौकरी करना ठीक नही। मुझे उसी वक्त त्याग पत्र दे देना चाहिए था। जहा इज्जत न हो, अपमान ही अपमान हो, वहा कभी नही रहना चाहिए।

लेकिन फिर अम्बेडकर की समझ म आया कि बार-बार नौकरी करना और छोडना यह ठीक नही है। मैं सहन करूगा। अभी घर की गाडी आराम स चल रही है फिर तकलीफ हो जाएगी।

यही सोचकर अम्बेडकर ने सतोष कर लिया। रामाबाई गभवती थी। उनके प्रसव का समय निकट आ गया था। पीडा अधिक होने पर उसे अस्पताल ले जाया गया।

वहा उसने एक शिशु को जन्म दिया। इस तरह भीम राव अम्बेडकर अब पिता बन गए। पुत्र का नाम यशवतराव रखा गया।

अम्बेडकर अपनी हालत से सन्तुष्ट नही थे। वे सोचने लगे थे कि यह प्रोफेसरी छोड देंगे। लन्दन जायेंगे और वहा जाकर पढेंगे। कानून की पढाई अधूरी छोडी है। वह पूरी करनी है। रुपये की समस्या पर थीसिस लिखनी है। उन्हें आगे बढना है और कुछ करना है। इसीलिए वे लन्दन जायेंगे।

अम्बेडकर सोच रहे थे कि लगभग पाच हजार रुपया उनके पास है। पाच हजार का ही और प्रबन्ध करना है। तब वे लन्दन जायेंगे और वे अपनी अधूरी शिक्षा पूरी करेंगे।

भीम राव की समझ मे नही आ रहा था कि रुपये का क्या प्रबन्ध करें?

एक दिन कलुस्कर ने उन्हे उदास देखकर पूछा तो उन्होने मन की बात

बतला दी। ऐसे म ही वहा नवल भटना आ गया। उसन परिस्थिति को समझा और हसकर कहन लगा—"जो तुम्हारे पास घर म पाच हजार रुपया है वह भाभी को दे दो। मुझस दस हजार ल लो और इग्लण्ड जाओ।'

' मैं यह तुम्हारा रुपया समय आने पर लौटा दूगा भटना। तुमने मरा बहुत साथ दिया है। मैं तुम्हारा एहसान जिन्दगी भर नही भूलूगा।"

"कसी बातें करते हो भीम राव। मैंने एक बार तुमस कहा था कि दोस्ती की जगह दिल म होती है। दोस्तो की मदद इसलिए नही की जाती कि वह उनस वापस ली जाएगी। मेर पास बहुत रुपया है। तुम जितना चाहो ल जाओ।'

इस तरह लन्दन जान की बात पक्की हो गई। दूसर दिन नवल भटना आया तो उसन भीम राव को एक खुशखबरी सुनाई। उसका कहना था कि कोल्हापुर क राजा न तुम्हार नाम पाच हजार रुपय का चेक भेजा है।

भीम राव के आनन्द की सीमा नही रही। तभी नवल भटना ने कहा—"पाच हजार का चेक भेजा है और पाच हजार मुझस ल लो। लन्दन की यात्रा करो। ईश्वर तुम्ह सफलता दगा।"

पासपोर्ट बन गया। भीम राव लन्दन के लिए रवाना हो गए। वहा जाकर उन्होन कानून पढना आरम्भ कर दिया। व थीसिस भी लिखन लग। वहा उन्ह एक अग्रेज मित्र मिला जो साथ ही पढता था। उसन उनकी गरीबी दखकर उन्ह आर्थिक सहायता दी। वह लन्दन का रहन वाला था और धनी बाप का बेटा था।

वहीं स अम्बेडकर ने बडौदा नरेश के नाम एक पत्र लिखा। उसम सारा हाल लिखा था और यह प्रार्थना की थी कि जब तक व लन्दन म पढ रह है उन्हे छात्रवत्ति दी जाए। व बहुत मजबूर ह।

बडौदा नरेश न उनकी प्रार्थना पत्र स्वीकार कर लिया। उन्ह तिख कर भेज दिया गया कि हर महीन छात्रवत्ति भेजी जाएगी। व खूब मन लगाकर पढे और निराश न हो।

भीम राव को महान सन्तोष हुआ और व खुशी म फूल नही समाए। अग्रेज मित्र की सहायता उन्हे प्राप्त थी। इसीलिए वे अपने विषय की

पुस्तकें जो अच्छी देखते, वे खरीद लाते। चौबीस घण्टे मे अठारह घण्टे मेहनत करते। उनका दृ सकल्प था कि अपने उद्देश्य मे सफल होकर ही भारत जायेंगे। यह उनका सौभाग्य है जो छात्रवृत्ति फिर मिलने लगी।

षड्यन्त्र

डॉक्टर भीम राव अम्बडकर को रियासत बडौदा से हर महीने छात्रवत्ति की राशि भेजी जाती। यह रियासत के ऊचे अधिकारियो का पस द नही था।

सब मिलकर रियासत दीवान के पास गए। सबका मिलकर मत एक हो गया। यह निश्चय किया गया कि अम्बेडकर की छात्रवत्ति ब द कर दी जाए। एक पत्र राजा साहब की तरफ स लिख दिया जाए कि कुछ कारण ऐसे हैं जिससे तुम्हारी छात्रवत्ति ब द की जाती है। वह अगले महीन नही भेजी जाएगी। यह पत्र लिखकर अम्बेडकर के पास ल दन भेज दिया गया। इस प दीवान रियासत की मोहर लगी थी।

भीम राव ने जब यह पत्र पढा तो उनके पैरो के नीचे से जमीन निकल गई। वे पूरी तरह स नाटे मे आ गए और अवाक् होकर सोचने लगे कि अब मुझे क्या करना चाहिए।

थोडी देर बाद अम्बेडकर की समझ म आया कि वे बडौदा नरेश को पत्र लिखें। उनसे प्रार्थना करे कि अभी उनकी छात्रवत्ति बन्द नही होनी चाहिए। अभी उनकी पढाई अधूरी है और थीसिस भी पूरी नही हो पाइ।

योजना को काय के रूप मे परिणत करन मे अम्बेडकर बहुत ही कुशल थे। वे जो सोचते उसे फौरन ही कर डालते।

यही कारण था कि उन्होंने बडौदा नरेश को पत्र लिख दिया।

महाराज गायकवाड को जब अम्बेडकर का पत्र मिला, तो उसे पढकर वे सन्नाटे म आ गए। उनकी समझ मे नही आ रहा था कि यह किसने

लिखकर भेजा है कि अम्बेडकर तुम्हारी छात्रवत्ति बन्द की जाती है। जरूर कुछ दाल मे काला है। तभी अम्बेडकर का पत्र आया है। इसका पता लगाना बहुत ही आवश्यक है कि मेरी आज्ञा का उल्लघन किसने किया ? किसने यह साहस किया ?

बडौदा नरेश ने रियासत दीवान को अपने पास बुलाया। उससे पूछा—"अम्बेडकर को लन्दन मे हर महीने छात्रवत्ति जा रही है न ?"

दीवान का चेहरा सफेद हो गया। उसने रुक कर जवाब दिया—"जा रही है सरकार ?"

'जा रही है ?

"हा महाराज !"

' फिर यह क्या है ? '

यह कहकर महाराज ने अम्बेडकर का पत्र दीवान के हाथ मे दिया। उसने पत्र पढा, तो उसे बेहोशी-सी आन लगी। तभी राजा साहब जोर मे चीखे—"आखिर यह सब क्या है ?"

"भूल हो गई महाराज क्षमा कर दीजिए।"

' तुम इसे भूल कहते हो। यह षड्यन्त्र है जो तुम सबने रचा। अरे, भीम राव महार है तो क्या हुआ ? इन्सान तो है। उसकी योग्यता देखो।

'हुजूर, माफ कर दीजिए। सबके कहने से ऐसा करना पडा।"

"आग ऐसी हरकत की तो तुम्हे नौकरी से निकाल दूगा।"

"मैं बार-बार क्षमा मागता हू।'

"अच्छा सुनो !'

"जी हुजूर ?"

"एक काम करो।"

"क्या ?"

"अभी मेरे सामने भीम राव को पत्र लिखो और इस महीने की रकम अग्रिम भेज दो।'

'अभी लो सरकार !"

जब भीम राव को यह सूचना मिल गई कि उनकी छात्रवृत्ति बन्द

नही की जाएगी तो उन्होंने सताष का सास ली। उन्हें भविष्य उज्ज्वल दिखलाई पडने लगा। उनमे साहस का सचार हुआ और नयी स्फूर्ति आ गई।

भीम राव ने थीसिस लिखी। वह रुपये की समस्या पर थी। विश्व-विद्यालय ने उसे स्वीकार कर लिया और उस पर अपनी मान्यता दे दी। अब भीमराव डॉक्टर ऑफ लिटरेचर हो गए। डॉक्टर आफ फिलासफी कहलाने लगे।

उनकी कानून की पढाई भी पूरी हो गई थी। उसम वे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हो गए। अब उन्हे भारत की याद सतान लगी। उनका सकल्प पूरा हो गया था। वे बैरिस्टर बन गए।

डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर को अपने मित्रो का स्मरण आने लगा। नवल भटेना की बहुत याद आती। कैलुस्कर को देखने के लिए वे व्याकुल हो उठे।

इसी तरह भीम राव अम्बेडकर को रामाबाई की भी याद आती। पुत्र यशवन्त राव आखो के सामने नाचने लगता। उन्हे लग रहा था कि उनका तन लन्दन मे है और मन भारत मे।

अपनी सफलता का समाचार सबसे पहले भीम राव अम्बेडकर ने बडौदा नरेश के पास भेजा। वे राजा साहब के बहुत आभारी थे और उन्हे अपना धर्म पिता समझते थे।

इसी तरह अम्बेडकर ने नवल भटेना को लिखा कि वे शीघ्र ही भारत आ रहे है। उन्हाने पी-एच० डी० कर लिया है और लॉ का कोर्स भी कर लिया।

कलुस्कर को भी भीम राव ने सूचना दे दी थी। घर मे भी उनका तार पहुच चुका था कि अमुक तारीख को उनका जहाज बम्बई बन्दरगाह पर पहुच जाएगा।

सब लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। अम्बेडकर ने आकर सबको प्रसन्न कर दिया।

अब अम्बेडकर के सामने एक समस्या और थी। वे बैरिस्टर बन गए थे, लेकिन उसका प्रमाण-पत्र कचहरी से प्राप्त करना था। इसके लिए

रुपये की जरूरत थी।

भीम राव ने यह बात नवल भटेना से कही तो वह फौरन ही राजी हो गया और कहने लगा—"तुम्हारे लिए मेरे घर का दरवाजा हमेशा खुला है भीम राव। जितने रुपये की जरूरत हो ले जाओ। कचहरी म वकालत का प्रमाण पत्र प्राप्त करो और फिर वकालत शुरू कर दो।"

भीमराव ने नवल भटेना की सहायता से वकालत का प्रमाण-पत्र ले लिया। व बम्बई की कचहरी म वकालत करने लगे। उन्ह किसी भी पुराने वकील की सहायता की आवश्यकता नही थी। स्वय अपन पर विश्वास था।

वे लोगो से कम-से-कम पैसे लेते। उनका मुकदमा मन से लडते। जो भी मुकदमा उनके हाथ मे आता वह कामयाब होकर रहता।

यही कारण था कि उनकी चर्चा फल गई और लोग उनकी तारीफ करने लगे। गरीब और अछूत उनके पास भागे चले आते। वे उन्हे अपना भगवान कहते। वे कम-से-कम पैसे लेते। फिर भी आमदनी बहुत अच्छी हो जाती।

रामाबाई को भी बहुत खुशी थी कि उसका पति दलितो और अछूतो का उद्धार कर रहा है। उसने सेवा-व्रत अपनाया है। उसका नाम हो रहा है। उसकी कीर्ति फैल रही है।

लेकिन भीम राव को अपनी योग्यता पर तनिक भी गुमान नही था। वे अपने उद्देश्य को पूरा करने मे लगे थे कि देश से छुआछूत मिटाकर रहेगे। अछूतो के लिए पूरे समाज से लडेंगे। उनके लिए नया कानून बनायेंगे। वह कानून सरकार द्वारा पास किया जाएगा और उसे मान्यता मिलेगी।

इस तरह डाक्टर भीम राव अम्बेडकर वकालत म तरक्की पर-तरक्की कर रहे थे। चारो ओर उनका नाम फल रहा था। वे किसी को हैरान नही करते। जो खुशी से दे देता उसे स्वीकार कर लेते।

भीम राव के पास अछूतो के मामले को लेकर पहला मुकदमा आया। [illegible] ब्राह्मणो ने अछूतो पर मान-हानि का दावा किया था। ये तीन अछूत थे। इन्होने ब्राह्मणो के खिलाफ एक पुस्तक लिखी थी। उसमे लिखा था कि इन ब्राह्मणो ने ही देश का पतन किया है। ये देश को विनाश की ओर ले जा रहे हैं। इहोने ही छुआछूत की बीमारी फैला रखी है। इनकी दृष्टि मे अछूत इसान ही नही है।

पुस्तक मे यह भी लिखा गया था कि इन ब्राह्मणो की दृष्टि मे अछूतो को जीने का कोई अधिकार नही है। ये इहें कुए से पानी नही भरने देत। नल से भी पानी नही लेने देते। इनका कहना था कि कुआ और नल अपवित्र हो जायेगा।

पुस्तक मे यह भी उल्लेख था कि अछूतो के लिए यह कहा जाता है कि उहे ऊची जाति के लोगो के सामने नही आना चाहिए। वे सडको की सफाई सवेरा होने से पहले ही पहले कर लें। अगर कोई ब्राह्मण उहे सामने आता दिखलाई दे तो उहें चाहिए कि वे सडक पर लेट जायें। यह ब्राह्मणो की पोप लीला है। उन्होने ढोग फैला रखा है।

मुकदमा सेशन जज की अदालत मे था। अम्बेडकर ने यह मामला अपने हाथ मे ले लिया। तीनो अछूतो ने पूछा कि वे मुकदमे का मेहनताना क्या लेंगे? इस पर डॉक्टर अम्बेडकर ने जवाब दिया कि वे फीस उससे लेते हैं जिसके पास पैसा होता है। गरीबो से मुनासिब मेहनताना ही लेते। जो आसानी से दे सकते हो, दे दो। मुझे रुपये का लालच नही है।

तीनो मुवक्किल बहुत खुश हो गये। उनके पास जितने रुपये थे वे बैरिस्टर अम्बेडकर को दे दिये। मुकदमा अदालत मे शुरू हो गया। पहले दिन सबूत गुजरे। दूसरे दिन जिरह हुई। तीसरे दिन तीनो अभियुक्तो ने अपनी सफाई पेश की। उनका कहना था कि यह पुस्तक लिखकर इन लोगो ने कोई भी अपराध नही किया है।

अब बहस की तारीख आई। बैरिस्टर अम्बेडकर ने सेशन जज को समझाया कि सरकार मेरे मुवक्किलो ने कोई भी कुसूर नही किया है। वे

बगुनाह है, इन्होने किताब म जो कुछ भी लिखा है। वह बिल्कुल सही है। उसे म अभी सिद्ध करता हू।

अदालत मे सन्नाटा छाकर रह गया था। पाच ब्राह्मण एक ओर कट-घरे म खडे थे। उनका वकील भी खामोश था।

तीनो अछूत मौन खडे थे और भीमराव अम्बेडकर उनके मुकदम की पैरवी कर रहे थे।

जनता भी इस मुकदमे को सुनने क लिए आई थी। यह बहुत ही दिल-चस्प मामला था। अछूता ने ब्राह्मणो के खिलाफ किताब लिखी थी। यह किस्सा पुन्न का था और वहा के ब्राह्मणो न भी मान हानि का मुकदमा चलाया था। उनका कहना था कि इन अछूतो को कठोर से-कठोर दण्ड अदालत द्वारा मिलना चाहिए।

भीम राव अम्बेडकर न सेशन जज को आग समझाया। वे कहने लग कि इन ब्राह्मणो ने अधेर मचा रखा है। ये अपने स्वार्थ का पूरा करत हैं। इसीलिए इन्हे अछूत बतलात और इनके साथ दुर्व्यवहार करत हैं। इन्होने पूर समाज को मूख बना रखा है और अपना उल्लू सीधा कर रहे है। इनके खिलाफ यह पुस्तक लिखी गई। यह बहुत अच्छा हुआ। जनता को भी जानकारी हो जानी चाहिए कि ब्राह्मणा की पोप लीला क्या है।

अम्बेडकर बहस कर रहे थ। पूरी अदालत सुन रही थी और सन्नाटा छाया था। उनका कहना था कि भारत का जितना भी धार्मिक साहित्य है वह अधिकाश ढाग और पाखण्डा स भरा पडा है। यहा बहु-देवतावाद ह। यहा मूर्ति पूजा हाती है और पत्थर को भगवान कहा जाता। यहा अवतारवाद है, शून्यवाद है, जातिवाद और भाग्यवाद है। यहा अधविश्वासों की कमी नहा। इसी के कारण भारत म अकमण्यता फली है। इस तरह मेरे मुवक्किलो न कोई भी अपराध नही किया है। मैं अदालत से प्रार्थना करता हू कि इन तीना को छोड दिया जाए।

सेशन जज की समझ मे अम्बेडकर की बातें अच्छी तरह आ गई थी। उसने अपना फैसला देत हुए दूसरे दिन कहा—'ब्राह्मणा न जो मान-हानि का दावा किया ह। वह गलत ह। पुस्तक क लेखक अपराधी नहा हैं। इन्होने उसम सच्ची बाते लिखी हैं। अपराधी ब्राह्मण है। जिन्हान अछूतो

को समाज से अलग कर रखा है। इसलिए अदालत इस नतीजे पर पहुंची है कि तीनो अपराधियो को साथ इज्जत से छोड दिया जाये।"

तीनो अपराधी छोड दिये गये। ब्राह्मण अपना-सा मुह लेकर रह गये। पूरी अदालत मे शोर मच गया कि डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने अछूतो का एक मुकदमा जीता है। उन्होने बहुत अच्छी पैरवी की और अदालत को खुश कर दिया।

अब भीम राव अम्बेडकर का सितारा बुलन्द था। उनकी चर्चा पूरी बम्बई मे फैल गई और कहा जाने लगा कि वे योग्य बरिस्टर हैं। अछूतो और गरीबो के मुकदमे मुफ्त लडते है।

अछूत वर्ग मे उनके प्रति श्रद्धा उमड पडी। उन लोगो ने आपस मे सभा की। उसमे यह निश्चय किया गया कि डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर को बडे से बडा सम्मान देना चाहिए। इसके लिए एक सभा की जाये और उसमे डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर को निमन्त्रित किया जाये। वे हमे आगे की राह दिखलायेंगे। हमारी समस्याओ का हल बतलायेंगे। हमे उनसे बडी-बडी आशायें हैं। वे अछूतो के भगवान है और शायद अछूतो के लिए ही उनका जन्म हुआ है।

इस तरह बम्बई के निकट जिला कुलावा मे एक विशाल सभा करने का आयोजन किया गया। डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर को निमन्त्रण-पत्र भेज दिया गया। उन्हे आने के लिए साथ मे अग्रिम धनराशि भी भेजी गई।

महार सम्मेलन

कुलावा के सूबेदार का कहना था। आखिर दलितो और अछूतो को कब तक सताया जायेगा? सताने की भी कोई सीमा होती है? एक कहावत है कि जब आदमी दबता है तो उसे और भी अधिक दबाया जाता है।

मगर जो सीना खोल देता उसके सामने फिर कोई नही आता।

जितने भी समय और दलित वग के लोग थे वे सबके सब इकट्ठे हो गये। उनका कहना था कि यह महार सम्मेलन इसीलिए होने जा रहा है कि दलित वग के लोगो को अछूत बतलाकर उनके साथ अत्याचार न किया जाये। उन्हे उनके अधिकार दिये जायें। वे भी इसान हैं और उन्ह भी जीने का हक है।

सबको खुशी इस बात की थी कि सम्मेलन की अध्यक्षता डाक्टर अम्बेडकर करेंगे। वे हमारी समस्याओ का समाधान करेंगे।

सम्मलन 19 और 20 माच को होने वाला था। यह सन 1926 ई० थी। महीना माच का था। सम्मेलन का प्रचार सरगर्मी के साथ हो रहा था।

महाराष्ट्र गुजरात और दूर दूर स लाग इस सम्मेलन मे आ रह थे। दीवाला पर जगह-जगह पम्पलेट लगाये गये थे। उनमे डॉक्टर अम्बडकर का चित्र था।

सम्मेलन का पाडाल बहुत बडा बनाया था। यह सब गरीबो के चन्दे से हुआ था।

नियत समय पर डाक्टर अम्बेडकर आ गये। उनका भव्य स्वागत किया गया। वे दलितो के हृदय-सम्राट थे, अछूतो के मसीहा थे। जैसे ही वे पधारे उनके स्वागत म जोर जोर से नारे बुलन्द होने लगे—"डाक्टर अम्बेडकर जिन्दाबाद। भीम राव अम्बेडकर जिन्दाबाद।"

भीमराव अम्बेडकर माइक पर आ गये। सभा मे लगभग एक लाख से ऊपर आदमी थे। सामने सिर ही सिर दिखलाई पड रहे थे। अम्बेडकर ने सबको सम्बोधित करत हुए कहा—"सबसे पहली बात तो यह है कि हमारे विचार दढ होने चाहिए। जब विचार दढ हागे तो हम हमारे इरादे स कोई भी डिगा नही सकता। दूसरी बात यह है कि हमारी बात मे वजन हाना चाहिए और तीसरी बात यह है कि हमारी आवाज मे ताकत का भी होना जरूरी है।"

अम्बेडकर आगे फिर कहने लगे—"सभी अछूत सगठित हो जायें। मेरा कहना मानो। तुम एक सूत्र म बध जाओ। अपनी शक्ति का विनाश मत करो। मुर्दा पशुओ का मास मत खाओ। तुम्हें सेना म भर्ती क्या नहीं

किया जाता। उसके लिए सरकार से लडो। समाज को दिखला दो और कह दो कि हम भी इसान हैं। अछूत उसने तुम्हे बनाया है।"

भीड मे तालिया बजने लगी और नारे फिर लगाये जाने लगे—"डाक्टर भीम राव जिदाबाद। डॉक्टर अम्बेडकर जिदाबाद।"

अब अम्बेडकर ने सभा मे अपना प्रस्ताव पारित किया। वे सबको सम्बोधित करते हुए मदु स्वर मे कहने लगे—"मेरा ब्राह्मणो से निवेदन है कि वे अछूतो के साथ गिरा हुआ व्यवहार न करें। उन्हे अच्छी दृष्टि से देखें। क्योकि वे भी उनके भाई हैं। समाज और सरकार को चाहिए कि अछूतो को नौकरिया दें। अछूत विद्यार्थियो को छात्रवृत्ति और भोजन दें। अपने मरे हुए जानवरो को खुद ही उठाकर ठिकाने लगायें।"

सरकार को चाहिए कि वह शराब की बिक्री पर प्रतिबध लगा दे। गरीब और अछूत बच्चो को पढने के लिए नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था करे।

अन्त मे यह निश्चय किया गया कि कल चौदार तालाब पर सामूहिक रूप से सब लोग पानी पीने जायेंगे।

सभा मे अम्बेडकर की जय-जयकार होने लगी। उनके नाम के नारे बुलद हो गए। सभा विसर्जित हो गई और लोग अपने-अपने घरो की ओर चल दिये।

चौदार तालाब

जैसे ही सवेरा हुआ। डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर पानी पीने के लिए चौदार तालाब पर आ गए। उनके साथ सैंकडो लोगो की भीड थी।

लोग आते जा रहे थे। भीड बढ़ती जा रही थी। सूरज निकल आया था।

अम्बेडकर ने सबसे पहले चुल्लू मे लेकर पानी पिया। वे कहने लगे—"अधिकार दिए नही जाते और न कोई दिलाता है। अगर अधिकार चाहते

हो तो उसके लिए लडो। जैसे आजादी पाने के लिए सेनानी लडते है। बस तुम समाज सरकार से लडो।"

जितना भी जन समूह था। सभी लोगो ने तालाब का पानी पिया। फिर जुलूस पाडाल के नीचे आया।

उच्च वर्ग के लोग यह तमाशा देख रहे थे। वे आपस में कहने कि अछूत अपनी सीमा को पार कर रहे है। उनकी हिम्मत तो देखो कि चौदार ताल छूत कर दिया।

जुलूस वहा से चला। वहा वीरेश्वर मंदिर के सामने आकर रुका।

सबसे पहले अम्बेडकर ने मंदिर में प्रवेश किया। उनके पीछे अन्य लोग भी गये।

ब्राह्मणो पुजारियो और धनिक वर्ग में जोश उमड आया था कि इन अछूतों को अभी पाठ पढाना होगा। पानी सिर पर चढ गया है। ये शूद्र आसमान को छू रहे है। ये महार होकर ब्राह्मण के साथ बढकर खाना चाहते है।

जुलूस मंदिर मे फिर पाडाल के नीचे आ गया। भोज का आयोजन था। सभी लोग खाना खाने लगे। तभी उनके विरोधी लोग लाठिया और भाले लेकर आ गए। आते ही उन पर टूट पडे और मार-काट करने लगे।

देर तक यह दृश्य चलता रहा। जुलूस में आये हुए लोग निहत्थे थे। इसीलिए मार खा गए। उच्च वर्ग और ब्राह्मणो ने यह समझा कि यह अछूत हमसे डर गए है। अब ये सिर कभी ऊपर नही उठायेंगे। इन्हे दण्ड मिलना बहुत जरूरी है। वह दे दिया गया।

दूसरे दिन डाक्टर भीम राव अम्बेडकर ने एक बहुत बडी सभा का आयोजन किया। कल की घटना से उन्हे दुख था और क्रोध भी था।

उन्होने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा— कल हमारा अधिकार चौदार ताल पर हो जाएगा।'

भीड मे शोर मच गया। आवाजें आने लगी। जोश में लोग कह रहे थे कि हम सीने पर गोली खायेंगे, लेकिन अपने अधिकार नही छोड सकते। दलितो के मसीहा डाक्टर अम्बेडकर की जय हो। डॉ० अम्बेडकर जिन्दाबाद।

भीम राव अपने भाषण मे आगे कहने लगे—"हमे पानी मिलना चाहिए। वह कुए का हो, तालाब का हो या फिर नल का। पानी की बहुत आवश्यकता है। उसके लिए हमे रोका नही जा सकता। हम पर जो अत्याचार होत हैं उन्हें सहन न करके उनका विरोध करना चाहिए। हमे अपनी राह खुद बनानी है। हम कठपुतली बनकर नही नाचेंगे। यह नाच बहुत दिन हो चुका।"

दूसरे दिन चौदार ताल पर अछतो का कब्जा हो गया। पुलिस भी उन्हे रोक नही पाई। वे सख्या मे अधिक थे। एक बहुत बडा जनसमूह था।

यह चर्चा सभी ओर फैल गई। ब्राह्मण वर्ग म डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर क लिए कहा जान लगा कि यह इसान अछूतो का मसीहा है। यह कुछ करके दिखलाएगा। गरीब और अछूत उसका नाम सुनत ही भाग चले आते हैं। वह उनका नेता है। वह बैरिस्टर है वह विद्वान है महार हुआ तो क्या। आदमी बहुत काबिल है। गरीब और अछूत जनता उसके पीछे पीछे दौड रही है। एक बहुत बडा परिवर्तन आने वाला है। जमाना बदल गया। अब शूद्र भी अपने को शिरोमणि कहता है।

साईमन कमीशन

बम्बई मे साइमन कमीशन आया था। सभा हो रही थी। इसमे साईमन भी मौजूद थे। भीम राव अम्बेडकर उनके सामने उपस्थित हुए और सम्मान भरे स्वर म कहने लगे—"सरकार, आपकी सेवा मे मैं कुछ निवेदन करना चाहता हू।'

भीम राव अम्बेडकर ने अपना परिचय साथ ही दे दिया और बतलाया कि वे अछूतो और गरीबो के एक महत्वपूर्ण नेता हैं।

अम्बेडकर का कहना था कि अछूतो की ओर से एक स्मरण-पत्र पेश करना चाहता हू।

"कैसा स्मरण पत्र ?'

"इस पत्र के द्वारा मैं करोडो अछूतो की समस्यायें और उनकी शिकायतें आपके सामने रखता हू ।"

"मुझे पत्र पढ़कर समझाओ अम्बेडकर ।"

"सुनिए ।"

अब अम्बेडकर कहने लगे—"भारत की आबादी का पाचवा भाग अछूतो और गरीबो का है। इन्हे पददलित किया जाता है। इन्हे सताया जाता है। इन पर ब्राह्मण और ऊची जाति के लोग मनमाना अत्याचार करते हैं। इन्हें मनुष्य नहीं पशु समझते हैं। ये कुए से पानी नही भर सकते। नल पर पानी पी नही सकते। तालाब पर नही जा सकते। इन पर जो अत्याचार हो रहे हैं वे बिल्कुल बन्द हो जाने चाहिए।"

जान साईमन ने अम्बेडकर की ओर देखा। उन्हे उनसे सहानुभूति हो आई थी। इसलिए कहने लगे—"इसके अलावा और तुम क्या चाहते हो अम्बेडकर ?"

"इन लोगो के लिए स्थान का आरक्षण होना चाहिए। इन्हें भी मन्त्रिमण्डल मे शामिल किया जाए और अछूतो का भी एक मत्री होना चाहिए। इनकी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध होना बहुत आवश्यक है। जल और थल सेना मे भर्ती होना अनिवार्य है।"

"क्या दलित और अछूत लोगो का एक ही मतलब है ?"

"हा सरकार।"

"तो क्या आप इनके प्रतिनिधि हैं ?'

"जी हा।'

"क्या आदिवासी भी अछूत हैं ?"

"हा, देश के कुछ भागो मे उन्हे अछूत कहा जाता है।"

"बम्बई प्रदेश के विधान मे इन लोगो के लिए क्या होना चाहिए ?"

"इनको हिन्दुओ से अलग और अल्पसख्यक कहना जरूरी है। प्रत्येक युवा को मत देने का अधिकार मिलना चाहिए। इनकी सीट भी सुरक्षित होनी चाहिए।"

"अगर हर एक युवक को मताधिकार न दिया जाए तो ?"

"तो फिर ये लोग अलग निर्वाचन क्षेत्रो की माग करेंगे।"

"तुम चाहते हो अम्बेडकर कि इन लोगो को सरकारी नौकरी दी जाए। ऐसा क्यो ?"

"मैं ऐसा इसलिए चाहता हू कि अछूतो के साथ न्याय नही होता और उन्हे उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है।"

"आप मुझे समझाइए कि यह दलित वग क्या है ?"

"दलित वग ?"

"हा दलित वग ।"

"तो सुनिए।"

"क्या ?"

"इन जातियो को अछूत कहा जाता है और इनसे छुआछूत फैलती है।"

"क्या ये लोग आपस मे एक साथ बैठकर खाते हैं ?"

"हा सरकार।"

"तो इन्हें हम हिन्दू ही कहेंगे न ?"

"हा, सरकार, इन्हें हिन्दू ही कहा जाएगा। जब तक ये हिन्दू घेरे से बाहर हैं तभी तक अछूत हैं। मैं अपने को हिन्दू भी कहता हू और गैर-हिन्दू भी।"

इस पर साईमन को हसी आ गई और वे अम्बेडकर से कहने लगे—"इसका मतलब तो यह हुआ अम्बेडकर कि अगर तुम हिन्दू घेरे के बाहर रहोगे तो हिन्दू कानून तुम पर लागू नही हो सकता।"

"सरकार, मैं हिन्दू हू।"

साईमन की खुशी का ठिकाना नही रहा। वे अम्बेडकर पर बहुत प्रसन्न हुए। उनका कहना था कि तुम एक सच्चे नेता हो अम्बेडकर। अछूतो को एक ऐसे नेता की जरूरत है। तुमने मेरी आखें खोल दी और थोडे मे ही बात को समझा दिया। अब मेरी समझ मे आ गया कि भारत मे समाज अछूतो के साथ अच्छा व्यवहार नही करता। उन्हें अछूत कहकर पुकारा जाता और उन्हें छुआ नही जाता।

साईमन का यह भी कहना था कि यही कारण है जो कि यह देश बहुत पीछे है। अगर इसकी यही हालत रही तो यह तरक्की कभी नहीं

करेगा। तरक्की करने को तैयार दलित और मुसलमान हैं। वे आपस में एक-दूसरे से गले मिलते हैं। उनमें किसी तरह का भी भेद भाव नहीं होता। सभी एक-दूसरे को समान समझते हैं। तभी वे तरक्की करते और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ते चले जाते हैं।

साईमन ने अम्बेडकर जी का आखिर में धन्यवाद दिया और हंसकर कहने लगे— 'डॉक्टर अम्बेडकर, तुमने हमारी सभा को सफल बनाया है। तुमने अपना बहुत बड़ा सहयोग दिया है। हम तुमसे खुश हैं। तुम जैसा चाहते हो और जो भी तुम्हारी मांग है वही किया जाएगा और वही होगा।'

सभा विसर्जित हो गई। लोग अपने-अपने घरों को जाने लगे। हर आदमी की जबान पर डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर की चर्चा थी। सभी का कहना था कि यह दलित वर्ग का नेता है। अछूतों और गरीबों का मसीहा है। यह उनके लिए कुछ करके रहेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं। यह सरकार से नहीं डरता। इसका कलेजा हाथ भर का है। खुलकर अपनी बात कहता और उसे अच्छी तरह समझा देता है। इसीलिए अछूत इसे अपना भगवान कहते हैं। इसकी पूजा करते और इसके पीछे पीछे चलते हैं।

गोलमेज सभा

तब भारत अंग्रेजों के अधीन था। ब्रिटिश सरकार यहां हुकूमत कर रही थी। लंदन में गोलमेज कान्फ्रेंस होने जा रही थी। उसमें महात्मा गांधी को बुलाया गया था। मुस्लिम लीग के प्रमुख नेता मोहम्मद अली जिन्ना को भी आमंत्रित किया था।

यह राजनैतिक सम्मेलन था। हिन्दू नेताओं में सर तेज बहादुर सप्रू भी गए थे। सर चमनलाल आदि नेता आये थे। मुसलमानों के भी प्रमुख नेता थे।

सिक्खों की तरफ से सरदार उज्ज्वल सिंह मौजूद थे। ईसाइयों के भी प्रतिनिधि वहां उपस्थित थे। काश्मीर और पटियाला के राजा, ऐसे ही

बड़ौदा और भोपाल के नरेश। अलवर और बीकानेर के राजा भी आये थे।

भारत के अछूतो के प्रतिनिधि डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर भी पहुचे थे। तब जार्ज पचम बादशाह थे। सम्राट से सबका परिचय कराया गया। इसके बाद सम्मेलन की कार्यवाही आरम्भ हो गइ। एक-एक करके लोग मच पर आते। माइक के सामने खड़े होते और अपनी बात कहते।

डाक्टर भीम राव अम्बेडकर को सबसे आखिर मे बोलने का मौका दिया गया। वे प्रसन्न दिखलाई पड रहे थे और उन्हें बहुत कुछ कहना था।

अम्बेडकर ने कहना शुरू किया—"हुजूर, आपके राज्य मे हमारे देश के अछूतो ने कोई भी तरक्की नही की। इसका मुझे दुख है और मैं इसकी शिकायत करता हू। क्या भारत से छुआछूत कभी जाएगी या नही? ये तालाबो से पानी नहीं भर सकते। कुए पर नही जा सकते। इनके छूने पर जल अपवित्र हो जाता है। मन्दिरो मे जाने के लिए इन पर रोक लगी है। इन्हे सेना और पुलिस मे भर्ती नहीं किया जाता। इनको खूब सताया जाता है।'

अम्बेडकर की बात ने सम्राट पर अपना बहुत गहरा प्रभाव डाला। वे पूर्णत प्रभावित हुए और सोचने लगे कि भारत के अछूतो के लिए कुछ न कुछ अवश्य करना होगा। वे बहुत पीडित है।

गाधी जी बम्बई मे मनी भवन मे ठहरे थे। डाक्टर भीम राव अम्बेडकर उनसे मिलने गए। दोनो नेताओ मे बातें होने लगी।

गाधी जी अम्बेडकर से नाराज थे। वे कहने लगे—' हमारी काग्रेस ने दलित वर्ग पर बीस लाख रुपया खर्च किया है और आपका कहना है कि मैंने अछूतो के लिए किया ही नही। तुम इन्हे अछूत कहते हो अम्बेडकर। मैं इन्हे हरिजन कहकर पुकारता हू।'

'महात्मा जी आपका मैं सम्मान करता हू। आपने जो बीस लाख रुपया अछूतो पर खर्च किया यह रकम उन्हे बाट देते, तो उनका कुछ भला होता। आप भारत की छुआछूत नही मिटा पाये। इसका मुझे दुख है। मैंने तय कर लिया है कि दलितो को मानवता का अधिकार दिलवा कर रहूगा।"

अम्बेडकर कह रहे थे और महात्मा गाधी सुन रहे थे। अम्बेडकर का

कहना था कि सिक्ख और मुसलमानो को आरक्षण का अधिकार दिया गया है फिर अछूतो को क्यो छोड दिया गया ?

गाधी जी कुछ देर बाद बोले—"अम्बेडकर, मैं तुम्हारी इस बात से सहमत नही हू।'

इस तरह देर तक दोनो नेताओ म बातें होती रही। मगर कुछ भी निश्चय नही हो पाया कि अछूतो के लिए कौन सा नया कदम उठाया जायेगा। और उनके लिए क्या किया जायेगा।

गाधी जी का कहना था कि वे हरिजनो का उद्धार कर रहे हैं और भीम राव अम्बेडकर का कहना था कि देश मे अछूतो के लिए कुछ भी नहीं हो रहा है। उनके लिए चारो ओर के दरवाजे बन्द हैं। न उनकी बात सरकार तक पहुचती और न समाज उनकी सुनता है। वे समाज मे रहकर भी समाज से दूर है। यह बडे दु ख की बात है।

दूसरी गोलमेज सभा

लदन मे दूसरी गोलमेज सभा का आयोजन किया गया था। इसम भारत के सभी नेता गय थे। डाक्टर भीम राव अम्बेडकर भी इसमे भाग लेने के लिए आये थे।

सम्राट जाज पचम उनसे हसकर मिल। उन्होने पूछ लिया—"तुम्हारा परिवार अब कैसा है अम्बेडकर ?'

"सरकार, आपकी दया स ठीक है, लेकिन मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नही ह।"

"एँ।'

'हा।'

"तो आपने इतनी ऊची शिक्षा कैसे पाई ?"

"महाराज गायकवाड का मैं आभारी हू। उन्होने मुझे आर्थिक सहायता दी और पढने के लिए इग्लैंड तथा अमेरिका भेजा। मेरा एक दोस्त है

कलुस्कर। मैं उसका भी आभारी हू। इसके अलावा एक और मित्र है नवल भटेना। उसने भी मुझे धन की सहायता हमेशा दी है।"

"ता इस सम्मेलन मे आप अछूतो के प्रतिनिधि बन कर आये है ?"

"आपका सोचना ठीक है सरकार।"

"आप मुझे बतलाइये कि आजकल भारत के अछूतो की दशा क्या है ?"

"यह न पूछिये।"

"क्यो ?"

"भारत की आबादी का पाचवा भाग अछूता का है। वे ब्राह्मणो की आखा म काटे की तरह खटकत है। ऊचे वग के लोग उनकी छाया स भी नफरत करत हैं। उ हे शूद्र कहकर पुकारा जाता और अच्छी निगाह से नही देखा जाता। उ हे शिक्षा नही दी जाती। उ ह समाज से दूर रखा जाता है। वे अछूत है। इसीलिए उ हे कुए और नला से पानी भी नही लेने दिया जाता। उ हे गुलाम समझा जाता है। उनकी हालत बहुत खराब है। अगर उसम सुधार न किया गया तो हमारे देश का पतन हो जाएगा।"

सम्राट न अम्बेडकर की बातें सुनी तो उ हे बहुत दु ख हुआ। उनके मुह से निकला—"इस पर विचार किया जायेगा अम्बेडकर। अब आप अपना माग-पत्र पेश कीजिये।"

उत्तर मे अम्बेडकर माग पत्र पढने लगे। जिसकी पहली शत यह थी कि अछूतो को उनकी जनसख्या के मुताबिक प्रा त की विधानसभा म और के द्र सरकार मे प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

दूसरी शत यह थी कि अछूता का निर्वाचन क्षेत्र अलग होना चाहिए।

और तीसरी शत यह थी कि आरक्षण बीस साल के लिए होना चाहिए।

गाधी जी ने इस पर आपत्ति की। वे बोले—"मैं यह मानने के लिए तयार नहीं हू। अम्बेडकर, तुम कहते हो कि तुम अछूतो का प्रतिनिधित्व करने आये हो। लेकिन तुम हि दू धम को खण्ड-खण्ड कर रहे हो। तुम्हार कहने के अनुसार किया जाएगा तो देश के टुकडे टुकडे हो जायेंगे। मैं अछूतो को ईसाई और मुसलमान बना लूगा लेकिन हिन्दू धम को खडित

नहीं होने दूगा।"

सम्राट ने जब यह देखा तो वे अपनी बात कहने लगे। वे बोले—"अम्बेडकर की सभी शर्तें स्वीकार की जाती हैं। भारत के अछूतों को अलग निर्वाचन क्षेत्र द्वारा आरक्षण का अधिकार दिया जाता है।"

सभी लोग चौंककर रह गए। सभा की कार्यवाही समाप्त हो गई। डाक्टर अम्बेडकर खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। वे जिस उद्देश्य को लेकर इस सभा म आए थे। उसम उह पूरी-पूरी सफलता मिली। यह उनके लिए संतोष का बहुत बड़ा विषय था।

यरवदा जेल

महात्मा गाधी जैसे ही गोलमेज सभा से लौटकर भारत म आए। वैसे ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे राजनतिक बदी बनाकर यरवदा जेल म भेजा गया। यह जेल पूना म थी।

गाधी जी ने जेल से एक पत्र वायसराय को लिखा। उसम लिखा था कि दलित वग के लिए अलग से आरक्षण देकर आप देश के साथ अन्याय करेंगे। इस तरह हमारा भारत टुकडो म बट जाएगा। मैंने आमरण अनशन आरम्भ कर दिया है। अछूतो को जिन्हे मैं हरिजन कहता हू, समाज से अलग नही किया जाएगा। ये भारतीय समाज मे रहेंगे। जिसे हिंदू धम कहा जाता है।

वायसराय को पत्र मिल गया था। वह उस पर विचार कर रहे थे। महात्मा गाधी ने आमरण अनशन कर रखा था। इससे पूरे देश म खलबली मच गई, सभी काग्रेसी नेता गहराई के साथ इस वतमान समस्या पर विचार करने लगे।

सारी बातो के बाद यह निश्चय किया गया कि बम्बई मे एक विशाल सभा का आयोजन होना चाहिए।

सभा आयोजित की गई और वह शीघ्र ही आरम्भ हो गई। पडित

मदनमोहन मालवीय ने अम्बेडकर को समझाया। उनका कहना था कि भारत और गाधी जी का ख्याल करो। अपने माग पत्र पर फिर विचार करो कि वह कहा तक ठीक ह।

इस पर अम्बेडकर ने जवाब दिया। वे बोले—"मुझे आपकी हर बात मजूर है, पडित जी। लेकिन मैं दलित वग को 'उनके अधिकार दिलाऊगा।'

मालवीय जी ने फिर समझाया और वे कह रह थे कि अम्बेडकर गाधी के साथ समझौता कर ला। इसमे सबकी भलाई है। दलितो पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाएगा।

अम्बेडकर सुनते ही कहने लग—'हिन्दू, मुसलमान सिख और ईसाई इन्हे कोई नही परेशान करता। सारा कसूर अछूता ने ही किया है। गाधी जी ने आमरण अनशन किया ह। अगर यही अनशन वे देश की आजादी के लिए करते, तो पूरा देश उपवास करने लगता। छोटी सी बात के लिए इतना बडा अनशन। यह मेरी समझ मे नही आता। मैं छुआछूत को मिटाना चाहता हू। इसीलिए यह मैं कर रहा हू।"

मालवीय जी ने बहुत समझाया मगर उनकी समझ म नही आया। मालवीय जी ने फिर कहा कि अछूतो को आरक्षित सीटें दे दी जायेंगी।

तब अम्बेडकर न कहा—"सीट ज्यादा से-ज्यादा दी जायें। उनके निर्वाचन का समय पच्चीस वष का रखा जाये।"

गाधी जी न अम्बेडकर का पत्र लिखकर जेल से भेजा। जिसे इस सभा मे पढ़कर सुनाया गया।

पत्र मे लिखा था—"प्रिय डाक्टर अम्बेडकर, देश को खण्ड-खण्ड मत होने दो। हिन्दू जाति को बचा लो। मैं तुम्हारे साथ हू। मेरी सहानुभूति भी तुम्हार साथ है। मेरा जीवन तुम्हारे हाथ मे है। अब जसा उचित समझो वैसा करो।"

कस्तूरबा गाधी अम्बेडकर के पास आयी। उनका कहना था कि गाधी जी से समझौता कर लो अम्बेडकर और उनकी जान बचाओ।

देवदास गाधी भी माता के साथ आये थे। ये गाधी जी के पुत्र थे। इन्होंने भी समझौता करने के लिए अम्बेडकर को प्रेरित किया।

इसके बाद पंडित मदनमोहन मालवीय ने डॉक्टर अम्बेडकर को एक बार फिर समझाया। व कहने लगे कि महात्मा गाधी की जरूरत पूरे देश को है। अगर यह सूरज अस्त हो गया, तो पूरे देश मे अंधेरा हो जाएगा। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि महापुरुष के प्राण बचाओ अम्बेडकर।

अब अम्बेडकर मौन हो गये। उन्होने मालवीय जी से कहा—"मैं अब इकार नही करूगा और ससार के महान नेता गाधी जी से समझौता कर लूगा।"

अम्बेडकर और गाधी जी का समझौता हो गया। उस पर दोनो नेताओ के हस्ताक्षर थे। वह समझौता पढकर सभा मे सुनाया गया।

उसकी पहली शत यह थी कि हरिजनो के लिए सीटें विधान सभा मे जो राज्य की होती है, वे 78 से बढाकर 148 कर दी जायें।

दूसरी शत यह थी कि इन सीटो का निर्वाचन कानूनी ढग से होगा।

तीसरी शत यह कहती थी कि केद्रीय विधान सभा मे हरिजनो के प्रतिनिधि मिले-जुल निर्वाचन क्षेत्रो के सिद्धान्तो के मुताबिक चुने जायेंगे।

चौथी शत यह कहती थी कि केद्र की विधान सभाओ म जितनी सीट नियत होती हैं। उनमे से हरिजनो के लिए अठारह प्रतिशत होनी चाहिए।

और पाचवी शत म लिखा था कि प्रदेश और केद्र दोनो चुनावो की विधि दस साल तक उसी तरह चलेगी।

छठी शत इसम यह था। केद्र और प्रदेश की विधान सभा मे जितनी भी आरक्षित सीट होगी सब हटायी जायेंगी तो उनके लिए हरिजनो का जनमत लिया जाएगा।

सातवी शत इस प्रकार थी कि अछूतो के मताधिकार का प्रबध लोथियन कमेटी की रिपोट के आधार पर किया जाएगा।

रामाबाई की मृत्यु

डाक्टर अम्बेडकर और गाधी जी की समझौते की आठवी शत यह थी कि

सरकारी नौकरियो और स्थायी नौकरियो मे हरिजनो के साथ कोई भी भेदभाव नही रखा जाएगा। हर विभाग म जैसी उनकी योग्यता होगी, वैसा ही स्थान दिया जाएगा।

नवीं शत इस तरह थी कि अछूत जातियो के लिए हर प्रदेश म शिक्षा का अधिक-से-अधिक अनुदान दिया जाएगा।

दसवी शत यह थी कि छुआछूत को जल्दी-से-जल्दी देश से मिटा दिया जाएगा।

पडित मनदमोहन मालवीय ने इस समझौते को पढकर सबको सुनाया। हिन्दुओ की ओर से उन्होने स्वय अपने हस्ताक्षर कर दिये।

डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर ने भी उस समझौते पर अपन दस्तखत किये।

अम्बेडकर ने अछूता को सम्बोधित करते हुए कहा—"दलितो, मैं तुम्हें तुम्हारे अधिकार दिलवा रहा हू। मैंने गाधी जी से समझौता इसलिए किया है कि वे अनशन समाप्त कर दे।"

सभा मे जोर-जोर से नारे बुलन्द होने लगते हैं—"डॉक्टर अम्बेडकर जिन्दाबाद, महात्मा गाधी जिन्दाबाद।"

इसके बाद अम्बेडकर फिर जेल मे आ गये। महात्मा गाधी ने उन्हे गले से लगा लिया। सभी नेताओ को बहुत खुशी हुई और वे महात्मा गाधी तथा अम्बेडकर की वाह-वाह करने लगे।

अम्बेडकर घर आये, तो मालूम हुआ कि रामाबाई की तबीयत बहुत ज्यादा खराब है। वे चिन्ता मे पड गये। रामाबाई के पास आ गये। वहा बठे अपने पुत्र यशवन्त राव से पूछने लगे कि तुम्हारी मा का क्या हाल है? किसी डॉक्टर को दिखलाया या नही?

इस पर यशवन्त राव ने बतलाया कि वह कई डॉक्टरो को दिखला चुका है। मगर सबने जवाब दे दिया और सभी का कहना है कि मरीज की हालत अच्छी नही है। उसके लिए तो ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

अम्बेडकर ने पूछा—"तबीयत कितने दिन से खराब है यशवन्त राव?"

"लगभग एक सप्ताह हो गया।"

'ऐं।"

"हा पिताजी। मा आपको बहुत याद कर रही थी। अब आप आ गये हैं। उनके पास बैठिए।"

भीम राव को हसी आ गई। वे पुत्र से कहने लगे—"अरे पागल, मा के पास बठकर क्या मैं उनको बचा लूगा। तू इलाज करा चुका है। अब मुझे भी दौड-धूप कर लेन दे। बैठने से काम नही चलेगा। मैं जाकर अभी डाक्टर लाता हू।"

यह कहने के साथ अम्बेडकर न जैसे ही जाने का आयोजन किया वैसे ही रोगिणी रामाबाई ने पति को मना कर दिया। वह दुखी स्वर म बोली—"अब डाक्टर लाने की कोई भी जरूरत नही है। मैं बहुत ज्यादा कमजोर हो चुकी हू और अब मुझे किसी तरह भी बचाया नही जा सकता। आये हो तो मरे पास बठो। न जाने मैं कब से तुम्हारी राह देख रही हू।'

लेकिन अम्बेडकर बठे नही। वे रामाबाई से कहने लगे—'मुझे जाने दो यशवन्त की मा। मैं अभी जाकर डाक्टर लाता हू।'

"नही।'

यह कहने के साथ ही रामाबाई ने पति का दामन पकड लिया। वह निराशा भरे स्वर मे कहने लगी—'जब डाक्टर जवाब दे गय हैं तो तुम मुझे कसे अच्छा कर लोगे। डाक्टर लाने की कोई जरूरत नही और मेरी सुनो।"

"क्या?

यह कहने के साथ भीम राव बैठ गये। वे रामाबाई के रुग्ण चेहरे की ओर देखने लगे।

रामाबाई ने धीरे से कहा—"मरे यशवन्त को कलेजे से लगाकर रखना। वह मरा इकलौता बेटा है और आखो का तारा है।"

'यशवन्त राव के लिए तुम निश्चिंत रहो रामाबाई। उसे मैं पलको की छाया म रखूगा।"

"और सुनो।'

क्या?"

"तुमने जो अछूतो का उद्धार करन का सकल्प लिया है, उसे पूरा करके रहना। इससे मरी आत्मा का शान्ति मिलेगी। इसीलिए कहती हू।"

'प्रिये, वह सकल्प लगभग पूरा हो चुका है। अभी आज ही महात्मा गाधी से मेरा समझौता हुआ है। तुम अच्छी हो जाओगी रामाबाई। मेरा अन्तःकरण कह रहा है।"

'देखो, समय बहुत कम है। मेरी आशा मत करो। मेरे जीवन के दिन पूरे हो गये हैं। मैं बहुत शिथिल हो गई हू।'

"निराश होने की जरूरत नही है रामाबाई। मैं तुम्हें मरने नही दूगा। तुम देखोगी अछूत नल से पानी लेंगे। तुम्हारे सामने वे कुए पर जायेंगे और पानी भरेंगे। इसी तरह तालाबो पर भी जाने से उन्हे कोई नही रोकेगा।"

"अच्छा हो कि यह सब हो। मगर मै थोडी देर की मेहमान हू। मुझे सुनकर खुशी हुई कि तुम्हे सफलता मिली है और तुम अछूतो के लिए यह सब कर रहे हो।"

'रामाबाई, तुमने मेरे लिए कितना बडा त्याग किया है। मुझे ऊची शिक्षा दिलाने म तुम्हारा अपना सबसे बडा सहयोग है। तुमने प्रेरणा दी। तुमने हिम्मत बधाई। तभी मैंने तकलीफ उठाकर ऊची शिक्षा प्राप्त की। और अब जब अच्छा समय आ गया है, तो मुझे छोडकर जा रही हो।'

बाबा साहब

रामाबाई को दवा दी गयी। उसकी दुबलता बढती ही चली जा रही थी। यशवन्त राव ने चम्मच मे पानी पिलाया। उसम कुछ चेतना आई और उसने फिर आखें खोल दी।

भीम राव न अपने घुटने पर रामाबाई का सिर रख लिया। व दुखी हो गए थे। इसीलिए आतस्वर मे कहने लग—"प्रिय, मैंन दलित वग के लिए जो कुछ चाहा था सब कर लिया। अब उन्ह योग्यता के अनुसार हर सरकारी नौकरी मे जगह दी जाएगी। उनके आरक्षण के लिए भी पूरा-पूरा प्रबन्ध हो गया है। तुम इतनी ज्यादा बीमार हो जाओगी। यह

मैंने सोचा भी नही था।"

"जो आदमी सोचता नही वही होता है।"

इसके बाद रामाबाई आग कुछ भी नहीं बोल पाइ। उनके मुह मे पानी डाला गया। एसे म ही एक हिचकी आई और उनकी गदन दाहिनी ओर को झूल गई।

यशवन्त राव खडा था। उसने यह देखा तो मा के शव पर कटे पेड की तरह गिरा। अम्बेडकर भी रामाबाई की मत्यु-देह से लिपट गए। वे करुण विलाप करने लग।

घर म हा हाकार मच गया। पडोस मे भी शार हो गया कि भीम राव अम्बडकर की पत्नी रामाबाई का देहान्त हो गया है।

रामाबाई की अत्येष्टि के बाद अम्बेडकर पागल जसे हो गए थे। अब उनकी समझ म कुछ भी नहीं आता। उनकी बुद्धि काम नही करती और वे जरूरत स ज्यादा परेशान रहत।

उन्हे जीवन से विराग हो गया था। अब जिन्दगी का मोह बिल्कुल नही रहा। इसीलिए नीरस हो गए थे।

जब अम्बेडकर ने अपने बाल मुडवा दिए। उन्होंने भगवा वस्त्र धारण कर लिये।

इसीलिए अम्बेडकर को अब बाबा साहब कहा जान लगा। कई महीन उदासी मे बीते। फिर उनका ध्यान अछूतों की ओर गया और वे उनके अधिकारा के लिए सोचने लगे।

इस बीच मे न जाने कितने निमन्त्रण अम्बेडकर के पास आए। लेकिन वे किसी भी सभा मे नही गए। उनका चित्त अशान्त था।

सच बात यह थी कि रामाबाई की मत्यु ने उनमे बहुत बडा परिवतन कर दिया था। अब उनमे वह पहले जैसा उत्साह और स्फूर्ति नही रह गई थी।

मनुष्य पर जब दुख का पहाड टूट पडता है तो उसका मनोबल अपने आप ही गिर जाता है। अम्बेडकर हमेशा टाल जाते और यह सोचा करते कि जहा बहुत जरूरी होगा मैं वहीं जाऊगा।

इस तरह दिन-पर दिन बीत रहे थे और लोग सोचने लगे कि अगर

यही परिस्थिति रही तो एक दिन वह जल्दी ही आ जायेगा जब डॉ० भीम राव अम्बेडकर राजनीति स सन्यास ले लेंगे।

यह राजनीति का क्षेत्र ऐसा है कि इसमे न तो कोई किसी का दोस्त है और न कोई दुश्मन। इसमे अवसर से लाभ उठाया जाता है और सच पूछो तो बात यह है कि इसमे सिद्धान्तो की लडाई होती है। फिर शत्रुता और दुश्मनी का सवाल ही नही उठता है।

इसी तरह डा० भीम राव अम्बेडकर यद्यपि अछूतो के नेता थे, लेकिन वे किसी के दुश्मन नही थे। उनका अपना अलग क्षेत्र था और उसके वे अकेले नेता थे। उनके साहस की सराहना प्रतिद्वन्द्वी पीठ पीछे करते। व कहते कि अम्बेडकर फौलाद का बना है। वह अपने इरादे से कभी डग मगाता नही।

मेवला कान्फ्रेंस

मेवला कॉन्फ्रेंस होने जा रही थी। इसमे डॉ० भीम राव अम्बेडकर को सादर आमन्त्रित किया गया था।

रामाबाई की मत्यु के बाद यह पहला अवसर था। जबकि वे किसी सभा मे भाग लेन जा रह थ। उनम काई उत्साह और उमग नहीं थी। वे जा इसलिए रह थे क्योंकि उन्हे जाना और पहुचना था।

वे सभा म आ गये। उनके आत ही नारे बुलन्द होने लगे—"डा० अम्बेडकर जिन्दाबाद। गरीबो के मसीहा अम्बेडकर जिन्दाबाद।"

तालिया बजाई गइ। भीम राव अम्बेडकर को अध्यक्ष का पद दिया गया था। इसीलिए उन्हें फूल मालायें पहनाई गइ।

अम्बेडकर बोलने के लिए खडे हुए। वे मच पर आ गए। माइक सामने था। वे कहने लगे—"आप लोगो को यह सुनकर आश्चय होगा कि मैं धम-परिवतन करने जा रहा हू। सभा मे लगभग दस हजार लोग मौजूद हैं। सभी लोग सुन ले कि मैं हिन्दू हू और हिन्दू ही रहूगा।"

पांडाल नारो और तालियों से गूंज उठा।

तभी अम्बेडकर ने कहा—'मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूं। मगर अब हिन्दू धर्म में मरना नहीं चाहता। इस धर्म से खराब और कोई दूसरा धर्म दुनिया में नहीं है इसलिए इसे त्याग दो। इस धर्म में लोग पशुओं से भी गये बीते हैं। सभी धर्मों को लोग अच्छा कहते हैं। लेकिन इस धर्म में अछूत समाज से बाहर है। जबकि वे समाज की पूरी तरह सेवा करते हैं।'

सभा के लोग सन्नाटे में आ गए। वे डॉ० अम्बेडकर का मुंह देखने लगे और सोचने लगे कि डॉक्टर साहब क्या कह रहे हैं?

अम्बेडकर हिन्दू धर्म से चिढ़े हुए थे। इसीलिए उसकी कटु आलोचना करते रहे। उन्होंने एक नया प्रस्ताव पारित किया था। वह सबके सामने रख दिया।

प्रस्ताव इस तरह था कि स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त करने का एक तरीका है और वह रास्ता है धर्म परिवर्तन का।

अम्बेडकर का कहना था कि यह सम्मेलन याद रहेगा कि भारत के पूरे महार धर्म-परिवर्तन के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

अम्बेडकर ने यह भी कहा कि महार जाति को चाहिए कि वह हिन्दू त्यौहारों को मनाना बन्द कर दे। देवी देवताओं की पूजा न करें और मन्दिरों में भी न जाए। जहां सम्मान न हो, मान न हो उस स्थान और उस धर्म को हमेशा हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए।

सभा के लोग सन्नाटे में आ गए थे। उन्हें महान आश्चर्य हो रहा था कि आखिर आज अम्बेडकर को हो क्या गया है।

हिन्दू धर्म के ठेकेदारों ने यह सुना तो उन्हें बुरा लगा कि उनके धर्म की आलोचना हो रही है। क्या हिन्दू धर्म इतना ज्यादा खराब है?

सभा की कार्यवाही चल रही थी। अम्बेडकर ने अछूतों के लिए जो कुछ भी कहा था उसका न तो कोई विरोध किया गया और न कोई तर्क ही किया गया।

सभी जानते थे कि अम्बेडकर से तर्क करना अपने लिए आफत मोल लेना है। वे बाल की खाल निकालते हैं। कानून की नस पहचानते हैं। उन्होंने पूरे संसार का कानून पढ़ा है। एक योग्य बरिस्टर हैं। अनुभवी नेता

हैं। वे समाज-सुधारक और देश-भक्त हैं।

सभा समाप्त हो गई। अम्बेडकर अपने घर आ गए। तब जाकर उनके चित्त को शांति मिली और वे सोचने लगे कि अब जल्दी किसी सभा मे नही जायेंगे।

सरकार से अपील

भीम राव अम्बेडकर को इस बात का दुख था कि अभी तक उन्होने जो भी अछूतो के लिए सुधार किया है वह कार्य रूप मे नही बदला गया। योजना जैसी की तसी है और उसमे कोई भी प्रगति नही हो रही है।

जब अम्बेडकर की समझ मे कुछ भी नही आया, तो वे गवनर के पास चल दिए। गवनर को राज्यपाल कहा जाता था और वह प्रदेश का सबसे बडा अधिकारी था।

गवनर से जाकर अम्बेडकर ने पूछा कि अछूतो के लिए जो अलग से कानून बना था उसका क्या हुआ?

इस पर राज्यपाल ने धीरे से उत्तर दिया—"सरकार इस योजना पर विचार कर रही है।"

"विचार कर रही है?"

"हा, विचार कर रही है।'

'कब तक विचार करेगी?"

"यह कुछ भी कहा नही जा सकता।"

"अछूतो को सेना मे भर्ती होने का आदेश दीजिए।"

"यह आदेश बहुत पहले ही किया जा चुका है।"

"हूं।"

"हा।"

"फिर क्या हुआ?'

"अभी तक अछूत और हरिजन सेना में भर्ती होने के लिए नहीं आए।

उनकी प्रतीक्षा है।"

'उनकी प्रतीक्षा है।"

"हा, उनकी प्रतीक्षा है।"

"अब तुम्हे और कुछ कहना है अम्बेडकर?'

"और कुछ ?"

"हा और कुछ।"

"भारत के वाइसराय ने अपनी कौंसिल मे जिसे कार्य-साधक कौंसिल कहते हैं, उसमे सिक्ख, मुसलमान और हिन्दू सभी को स्थान दिया है। अछूतो को उसमें बुलाया भी नहीं गया और न कोई स्थान दिया गया है।-इसका मतलब तो यह हुआ कि भारत के वाइसराय ने भी अछूतो के साथ सौतेला व्यवहार किया है।"

राज्यपाल ने इस सम्बन्ध मे अपनी व्यवस्था प्रगट की। उनका कहना था कि यह राज्य का मामला नही है अम्बेडकर। यह केन्द्र सरकार का मसला है। तुम जाकर सीधे वाइसराय से बात करो।

अम्बेडकर को सोचना पड गया। उन्हे ऐसा लग रहा था कि व आसमान से गिर पडे हैं और खजूर मे अटक गए हैं। इसका नतीजा क्या होगा उनकी समझ मे नही आ रहा था।

देर बाद अम्बेडकर की समझ मे आया कि ये सरकारी काम है। इन्हे ही राज-काज कहा जाता है और ये धीरे से होते है। इनम जल्दी करो से कोई लाभ नही। काम बिगड जायेंगे।

यही कारण था कि अम्बेडकर ने सन्तोष कर लिया और वे समय की प्रतीक्षा करने लगे। वे जानते थे कि वे अपनी आवाज उठा चुके हैं। जो सरकार के कानो तक पहुच चुकी है। अब उनकी समस्या मे सुधार होगा और होता ही चला जाएगा।

राज्य का रथ धीरे धीरे चलता है। उसमे जल्दी कभी नही की जा सकती। जल्दी करने से ही काम बिगडता है।

अम्बेडकर राज्यपाल के अतिथि बन गए थ। वे कुछ दिन के लिए वहीं ठहर गए। व अपन चित्त को शान्ति देना चाहत थ। एकान सेवन की उनकी इच्छा थी, जो यहा पूरी हो रही थी।

राज्यपाल को उनसे सहानुभूति हो गई थी। दानो के विचार आपस मे मिल गए। इसीलिए अम्बेडकर वहा ठहर गए और उन्होने निश्चय कर लिया कि दो चार दिन अभी राज्यपाल के पास ही रहेगे।

राज्यपाल को खुशी थी। वे अम्बेडकर को मेहमान के रूप मे पाकर बहुत प्रसन्न थे। उन्होने विचारो से अम्बेडकर से समझौता कर लिया था।

वाइसराय और अम्बेडकर

राज्यपाल ने अम्बेडकर से कह दिया था कि महार बटालियन महारो के लिए खोल दी गई है। उसमे महार लोगो को अधिक-से-अधिक भर्ती करो।

मगर अम्बेडकर का कहना था कि वाइसराय ने कौंसिल मे हिन्दू-मुसलमान और सिक्ख सभी लोगो को स्थान दिया है। फिर अछूता का कोई प्रतिनिधि क्यो नही रखा। मैं यह जानना चाहता हू।

इस पर राज्यपाल ने कहा—"इस मामले पर वाइसराय से ही बात करो अम्बेडकर। वही इसका जवाब देंगे।'

दूसरे ही दिन वहा वाइसराय का आगमन हो गया। राज्यपाल ने उनके सामने अम्बेडकर की समस्या रख दी।

इस पर वाइसराय मुस्कराये और हसकर अम्बेडकर से पूछने लगे—"कहो अम्बेडकर, अब क्या झगडा है?"

"सरकार, एक फरियाद है।"

"फरियाद ?'

"हा, फरियाद।"

"क्या ? '

"आपने अपनी कौंसिल मे हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख सभी भाइयो को लिया है। फिर अछूतो को क्यो छोड दिया ?"

'अम्बेडकर, तुम ठीक कहते हो।"

"सरकार, जनसख्या के हिसाब से महारो को भी कौंसिल मे लिया जाए। पद योग्यताअनुसार दिया जाए।"

"मैं आपको ही कौंसिल का सदस्य मान लेता हू।"

"यह ठीक है सरकार, लेकिन "

"लेकिन क्या अम्बेडकर ?"

"सरकार, अछूतों के तीन सदस्य होने चाहिए।"

"तीन ?"

"हा, तीन।"

"अभी तो आप पहले प्रतिनिधि हैं। बाकी दो के लिए और विचार कर लिया जाएगा।"

"अछूता को सरकारी नौकरी म भर्ती के लिए उम्र की भी कुछ छूट मिलनी चाहिए। उनसे परीक्षा का शुल्क भी कम से कम लेना चाहिए। उनम से एक उच्चाधिकारी बना दिया जाए।"

"अम्बडकर, मैं तुम्हारी यह बात भी मानता हू।"

"आपको, बहुत-बहुत धयवाद है वाइसराय महोदय ! मुझे आपसे यही आशा थी। आपन अछूता की ओर ध्यान दिया।'

जब भीम राव अम्बेडकर वाइसराय के पास से लौटे, तो वे बहुत प्रसन्न थे। उन्हे सन्तोष हो गया था कि वे जो चाहते थे वही हो गया। अब अछूत अधिकार पायेंगे। वे अपने अधिकारा का उचित प्रयोग करेंगे। वे पीछे नही रह सकते। सरकार उन पर ध्यान देने लगी है। अम्बेडकर घर म आ गए। वे परिवार के साथ आमोद प्रमोद करने लगे।

कुछ दिन बाद भारत के आजादहोने की बात चलने लगी। वाइसराय का कहना था कि भारत के दो टुकडे किए जाएगे। एक हिन्दुस्तान होगा और दूसरा पाकिस्तान कहलायेगा।

भारत के नेता यह मानने के लिए तयार नही थे। यही विवाद था।

अम्बेडकर ने गाधीजी से कहा—"देश का बटवारा करने से पहले अछूतो की समस्या हल करो।'

इस पर गाधीजी ने कहा—"अछूतो को उनके अधिकार मिल गए हैं। समस्या देश के विभाजन की है। हम देश के दो टुकडे नही होने देंगे।'

अम्बेडकर अछूतो की समस्या लिये खडे थे और गाधीजी के सामने बहुत बडी समस्या थी कि भारत के किसी तरह भी दो टुकडे नही होने चाहिए।

अम्बेडकर और गाधी जी की वार्ता

महात्मा गाधी न अम्बेडकर को समझाया। उनका कहना था कि यरवदा जेल पूना मे अभी समझौता हो चुका है। क्या तुम मुझस सतुष्ट नही हो अम्बेडकर ?

इस पर अम्बेडकर ने जवाब दिया—"उससे मैं बहुत खुश हू। मगर मुझे एक बात और कहनी है।"

"क्या ?'

"अछूत भी स्वतत्र भारत म ऊचे अधिकारा को पायेंगे। इसके लिए आप क्या कहत हैं ?"

"इसके लिए मैं पूरी तरह सहमत हू।"

"आप धय हैं बापू ! आप राष्ट्रपिता है।"

"तुम्हे और कुछ कहना है अम्बेडकर ?'

'हा।"

'क्या ?"

"आप अछूतो का हित कर रहे हैं। उन्हे हरिजन का नाम दिया है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि आप अछूतो को कितना प्यार करते हैं।'

'मैं दलित वग क अधिकारो का दिलवाऊगा। अम्बेडकर, मैंने दढ निश्चय कर लिया है कि भारत से छुआछूत मिटा दूगा। इसके लिए जितना बडे-से-बडा त्याग करना पडेगा, मैं करूगा।'

"आप पूज्य हैं बापू !"

गाधी जी के पास तभी पण्डित जवाहरलाल नेहरू आ गए। देश के बटवारे का प्रसग चलने लगा। नेहरू जी का कहना था कि हम ऐसी

आजादी लेकर क्या करेंगे। जिसमे देश के टुकडे-टुकडे कर दिए जायें। अभी वाइसराय भारत को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो टुकडो मे बाट रहे है। फिर जब देश आजाद हो जाएगा तो सभी जातिया अपना-अपना राज्य मागेंगी। यह अच्छा नही है। देश का बटवारा नही होना चाहिए।

नेहरू जी का यह भी कहना था कि भारत का प्रधान मन्त्री जिन्ना को बना दिया जाए। मुझे यह स्वीकार है। मैं प्रधान मन्त्री नही बनना चाहता।

मगर वाइसराय का कहना था कि जिन्ना पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री बनेंगे। देश के दो टुकडे किए जायेंगे। तभी आजादी दी जाएगी। बारहवी सदी से मुसलमान भारत मे रहते चले आए हैं। उन्हें उनका हक जरूर दिया जाएगा। इसीलिए पाकिस्तान बनाया जा रहा है।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गाधी दोनो नेता गहरी समस्या मे डूब गए। वे उस पर गहराई के साथ विचार करने लगे। डा० भीम राव अम्बेडकर उनके पास बैठे थे।

प० गोविन्द वल्लभ पन्त भी महात्मा गाधी के पास आकर बैठ गए। वे भी इस पक्ष मे नही थे कि देश का बटवारा किया जाए।

सरदार बल्लभ भाई पटेल भी वहा आ गए और वर्तमान समस्या का समाधान निकाला जाने लगा।

गाधी जी को बहुत दुख था। उनका कहना था कि एक लम्बे समय के बाद अग्रेज हमे आजादी दे रहे हैं। मगर यह आजादी समझ मे नहीं आती। देश खण्डित हो जाएगा। हम दो भागो मे बट जायेंगे।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद भी आ गए। उनका गाधी जी से कहना था कि किसी भी तरह हम ब्रिटिश सरकार का फैसला मजूर नही करेंगे। यह अग्रेजो की चाल है। वे हमारे देश के टुकडे करना चाहते हैं।

अम्बेडकर अपने अछूतो की समस्या भूल गए। उनका मन भी कहने लगा कि भारत के टुकडे नही होने चाहिए। अगर ऐसा हो गया, तो यह आजादी हमे बहुत महगी पडेगी। हमे ऐसी स्वतन्त्रता नही चाहिए। हमने आजादी पाने के लिए बहुत बडे-बडे त्याग किए हैं। भारत खण्ड-खण्ड नही होगा यह मैं वाइसराय को समझाऊगा।

स्वतन्त्र

जब महात्मा गांधी ने देखा कि अगर देश का बटवारा स्वीकार नही कि जाता है तो आजादी नही मिलेगी और भारत परतन्त्र ही बना रहेगा।

सभी नेता विवश हो गए। सबको देश का बटवारा स्वीकार क पडा। 15 अगस्त सन् 1947 ई० मे भारत के दो टुकडे हो गए। एक नाम पाकिस्तान रखा गया और दूसरे को हिन्दुस्तान कहा गया।

अम्बेडकर भी सभी नेताओ के साथ थे। वे आजादी पाने की खुशी फूले नहीं समा रहे थे। पूरे देश मे रोशनी हो रही थी और आजादी त्योहार मनाया जा रहा था।

ऐसे शुभ मौके पर खून-खराबी भी हुई। पाकिस्तान म मुसलमान हिन्दुओ से पशु से भी गया-बीता व्यवहार किया। उन्होंने उनकी जान इज्जत लूटी और फकीर बनाकर हिन्दुस्तान भेज दिया।

हिंदुस्तान मे भी ऐसी घटनायें कम नही हुईं। मुसलमान कत्ल गए। वे लूटे गए। उन्हें पाकिस्तान जाने के लिए मजबूर कर दिया ग

इस तरह आजादी की खुशी न तो पाकिस्तान को मिली और हिन्दुस्तान मे ही किसी ने उसका लाभ उठाया। सबके सामने एक समस्या आकर खडी हो गई थी कि देश मे किस तरह शान्ति हो। बेफिक्र की नीद सोए।

15 अगस्त सन् 1947 ई० से लेकर लगभग एक साल तक श स्थापित नही हुई। पाकिस्तान की सरकार अलग बन गई थी और हि स्तान अपने मे आबाद था।

भारत म प्रजातन्त्र आया था और तीस करोड हिन्दू उसका लाभ रहे थे। यह कहा जा रहा था कि अपने घर मे अपना राज्य आया है। सबके साथ एक समान-ही व्यवहार होगा।

अभी तक तीस प्रतिशत लोग भारत मे शिक्षित थे और अब प्रतिशत हो जायेंगे। इसमे लगभग पच्चीस साल का समय लगेगा।

भारत अपने पैरो पर खडा होगा। वह इस्पात का अधिक-से-अ उत्पादन करेगा। बिजली के उत्पादन के लिए वह अरबो रुपया खर्च

देगा। ताकि पूरे भारत को बिजली उपलब्ध हो सके।

भारत अपनी पचवर्षीय योजनाए बनाएगा और उन्ही के आधार पर चलता चला जाएगा। वह प्रगति-पर-प्रगति करेगा। अब वह अंधेरे से उजाले मे आ गया है और उसकी आखें खुल गई हैं।

प० जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री थे। उनके सामने सबसे पहली समस्या यह थी कि जो शरणार्थी पजाब और सिन्ध से आ गए थे उन्हे भारत मे बसाना था। उनकी जीविका की समस्या का समाधान करना था।

सन् '47 पूरा हो गया। '48 आरभ हो चुका था। नेहरू जी ने अपना मन्त्रिमडल बना लिया था। उनका देश हित का काय भी आरम्भ हो चुका था। 15 अगस्त सन 1947 ई० को वाइसराय ने एक व्यस्त सभा म कहा था कि हिन्दुस्तान के रहनेवालो ! तुमने आजादी के लिए तन-मन और धन स सघप किया है। आज तुम्हारा देश आजाद है और तुमको आजादी दी जा रही है। देश के दो टुकडे कर दिए गए हैं। एक है पाकिस्तान, जिसके प्रधान मन्त्री मोहम्मद अली जिन्ना बनेंगे।

दूसरा है हिन्दुस्तान, जिसके प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू हैं। मैं महात्मा गाधी को देश की बागडोर दे रहा हू। वे राष्ट्र पिता हैं और बापू कहलाते हैं। उन्ही की तपस्या का यह फल है, जो तुम्हें आजादी दी जा रही है। अब भारत आजाद है। अपने घर मे अपना राज्य मनाओ और आनन्द करो।

कानून मन्त्री

अब भारत स्वतन्त्र हो गया था। देहली का पार्लियामेंट भवन भारतीय नेताओ स खचाखच भरा था। यह घोषणा हो चुकी थी कि डॉ० बाबू राजेन्द्र प्रसाद को सबसे पहले भारत सरकार का राष्ट्रपति बनाया जाता है।

प० जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रधान मन्त्री है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी हैं। वे पूरे देश के बापू हैं।

महात्मा गाधी ने बाबू राजेन्द्र प्रसाद को गोपनीयता की शपथ ग्रहण करवाई। इसी तरह उन्होने प० जवाहरलाल नेहरू को भी प्रधान मन्त्री के पद की शपथ दिलाई।

प० जवाहरलाल नेहरू ने अपना मन्त्रिमडल बना लिया। उसमे सरदार बल्लभ भाई पटेल को गृह मन्त्री बनाया गया था। वे लौह-पुरुष थे, उन पर नेहरूजी की अडिग आस्था थी।

डा० भीम राव अम्बेडकर को प० जवाहरलाल नेहरू ने ऊचे-से-ऊचा पद दिया। यद्यपि अम्बेडकर विपक्ष के नेता थ, लेकिन फिर भी नेहरू जी ने उनका सम्मान किया। स्वतन्त्र भारत मे वे सबसे पहले कानून मन्त्री बनाए गए।

इन सब नेताओ ने 15 अगस्त सन् 1947 ई० को ही गोपनीयता की शपथ ली।

अब राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति थे। उनका कहना था कि भारत का नया सविधान बनना चाहिए जब नया सविधान बन जाएगा, तो पुराना रद्द कर दिया जाएगा। आजाद भारत मे नए सविधान की जरूरत है।

प० जवाहरलाल नेहरू का भी यही कहना था कि सविधान अवश्य बनना चाहिए और ऐसा बनाया जाए जिसमे सभी देशो के सविधान के गुण हो।

राजेन्द्र प्रसाद सविधान बनाने के लिए अलग एक समिति बनाना चाहते थे। नेहरू जी ने इसका समर्थन किया और समिति बन गई।

नेहरू जी ने राजेन्द्र प्रसाद से कहा—"डॉ० भीम राव अम्बेडकर को देश विदेश के सभी सविधानो की जानकारी बहुत अच्छी है। इसलिए मैं चाहता हू कि भारत का नया सविधान डॉ० अम्बेडकर ही बनाए।"

इस पर राजेन्द्र प्रसाद उनका समर्थन करते हुए अपनी बात कहने लगे—"यह बिल्कुल सच है कि भीम राव अम्बेडकर ने जितनी ऊची शिक्षा पाई है। उतनी भारत के अन्य पुरुष में नहीं है। वे महा विद्वान हैं। मैं चाहता हू कि सविधान ड्राफ्टिंग कमेटी का उन्हें अध्यक्ष बना दिया जाए।"

"आपने ठीक सोचा है। डॉ० अम्बेडकर ही भारत का नया सविधान बनायेंगे।"

राजेन्द्र प्रसाद ने अम्बेडकर को बतलाया कि सविधान ड्राफ्टिंग कमेटी के वे अध्यक्ष बना दिए गए हैं। उन्हे चाहिए कि सविधान बहुत आसान और अच्छा बने।

"आपकी आज्ञा का पालन होगा, राष्ट्रपति महोदय !"

डॉ० भीम राव अम्बेडकर भारतीय सविधान बनाने मे पूरी तरह व्यस्त हो गए। उनके साथ जो सहयोगी काय-कर्ता थे। वे उनका लोहा मानते कि अम्बेडकर को कानून का बहुत अच्छा ज्ञान है। उन्होंने लगभग सभी देशों के सविधानो का अध्ययन किया है।

वे परिश्रम करने मे भी पीछे नही हैं। चौबीस घण्टे मे अठारह घण्टे काम करते हैं।

इस तरह सविधान बनना आरम्भ हो गया। डा० अम्बेडकर उसमे दिन और रात एक करे रहे हैं। उनकी यही कोशिश थी कि सविधान की कोई भी धारा ऐसी न रह जाए। जिसके लिए ससार को यह कहना पड़े कि भारत का सविधान बहुत सख्त है।

डॉ० अम्बेडकर लगन से इस शुभ काय मे व्यस्त थे। वे चाहते थे कि जल्दी से जल्दी सविधान राजेन्द्र प्रसाद और नेहरू जी के सामने रख दें।

भारतीय सविधान

भारतीय सविधान बनकर तैयार हो गया था। डॉ० भीम राव अम्बेडकर ने उसे प्रधान मन्त्री प० जवाहर लाल नेहरू और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के सामने पश रख दिया। दोनो नेताओ ने उस सविधान का स्वागत किया। उसकी कई प्रतिमा तैयार हुई थी। उसे पढा, समझा और अध्ययन किया गया।

सविधान बहुत सरल था। सबको बडा अच्छा लगा। सभी लोग

डॉ० अम्बेडकर की वाह-वाह करने लगे। उन्हे बधाई दी गई। एक सभा का आयोजन किया गया।

उस सभा मे राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने कहा—"डॉ० अम्बेडकर अस्वस्थ थे, लेकिन फिर भी उन्होंने बडी लगन और मन से काम किया। उन्हें जो महान काम सौंपा गया था उसे उन्होने शीघ्र ही पूरा कर दिया। हम डॉ० भीम राव अम्बेडकर के बहुत आभारी हैं। उन्हे बधाई देते हैं और सचमुच वे बधाई के पात्र हैं।"

प० जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण मे कहा—"डॉ० अम्बेडकर सविधान के शिल्पकार हैं। यह नया भारतीय सविधान इनकी देन है। इतिहास मे उनका नाम सोने के अक्षरो मे लिखा जाएगा। वे महापुरुष हैं।

अन्य नेताओ ने भी डॉ० अम्बेडकर की भूरि भूरि प्रशसा की।

सन 1950 ई० मे 26 जनवरी के दिन यह नया भारतीय सविधान जनता पर लागू किया गया। उस दिन गणतन्त्र दिवस का समारोह मनाया गया। जो आज भी हर साल 26 जनवरी को मनाया जाता है।

इस तरह डॉ० भीम राव अम्बेडकर ने भारतीय सविधान बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। वे देश मे ही नही, विदेशो मे भी चर्चा का विषय बन गए।

डा० भीम राव अम्बेडकर को मधुमेह की बीमारी हो गई थी। इसीलिए वे दिन पर दिन दुबल होते चले जा रहे थे। उनका शरीर कमजोर हो गया था। देखने म लगता कि बहुत दिनो से बीमार हैं।

यशवन्त राव को इसकी चिन्ता थी। इलाज चल रहा था, लेकिन कोई भी फायदा नही होता। बीमारी और बढती चली जा रही थी।

अन्त म यशवन्त राव ने कहा—"पिता जी, मैं आपको अस्पताल मे दाखिल करना चाहता हू।"

"क्या ?"

"घर पर रहकर आप ठीक नही हो सकते।"

"तो क्या अस्पताल मे जाकर अच्छा हो जाऊगा ?"

"हा, मुझे पूरा यकीन है।"

"तो ले चलो, मैं मना नहीं करूगा।"

इस तरह डॉ० अम्बेडकर को बम्बई के मावलकर अस्पताल मे भर्ती कर दिया गया।

डॉक्टरों ने बतलाया कि उन्हें मधुमेह की पुरानी बीमारी है। ठीक होने मे समय लगेगा। उनके लिए अलग से एक लेडी डाक्टर नियुक्त कर दी जाएगी। इलाज सूझ-बूझ के साथ होगा। क्योंकि उनकी प्राण रक्षा बहुत जरूरी है। देश के वे माने हुए एक ऊचे नेता हैं। उन्होंने देश को जो कुछ भी दिया वह कोई नहीं दे सकता है।

लेडी डॉक्टर शारदा कबीर के हाथ मे अम्बेडकर का इलाज सौंप दिया गया। वह पूरे मनोयोग से अछूतो के नेता अम्बेडकर की सेवा करने लगी।

अम्बेडकर लेडी डॉक्टर शारदा कबीर से शीघ्र ही प्रभावित हो गए। उन्हें आराम मिलने लगा। वे पाते कि शारदा कबीर उनका बहुत अधिक ख्याल रखती हैं।

शारदा कबीर

लेडी डॉक्टर शारदा कबीर अम्बेडकर को दवा दे रही थीं। तभी उन्होने पूछ दिया—"आपका शुभ नाम क्या है, डॉक्टर साहब ?"

"मुझे लेडी डॉक्टर शारदा कबीर कहते हैं।'

"बहुत अच्छा नाम है। मैं आपका आभारी हू। आप मेरे केस में गहरी रुचि ले रही हैं।"

"इसमे आभार प्रकट करने की कोई भी जरूरत नही है डॉक्टर साहब ! मैं अपने कतव्य का पालन कर रही हू। जो मुझे करना चाहिए।"

शारदा कबीर ने अम्बेडकर को बतलाया कि उसका नाम सविता भी है। अम्बेडकर का कहना था कि मेरे पूरे बदन मे दर्द रहता है।

इस पर सविता ने समझाया कि दवा दी जा रही है। वह धीरे से

ठीक हो जाएगा।

एक दिन अम्बेडकर ने सविता से पूछ दिया। वे बोले—"आपकी जाति क्या है, डॉक्टर साहब ?"

"मैं ब्राह्मण हू !"

"आप ब्राह्मण हैं ?"

"हा।"

"मगर आप छुआछूत बिल्कुल नही मानती। मैं महार हू और आप मेरी दवा कर रही हैं।"

"इसमे क्या हुआ ? यह तो हर डॉक्टर का कतव्य है। मुझे आपसे हमदर्दी है। ऐसा लगता है कि आप मेरे अपने हैं।"

"ऐं !"

"हा, डॉक्टर अम्बेडकर !"

"मेरी पत्नी अभी कुछ साल हुए परलोक सिधार गई। मैं अकेले ही जिदगी का सफर पूरा कर रहा हू। यह मेरा दुर्भाग्य है।"

"यह तो बुरा हुआ।"

"हा, डाक्टर साहब, अगर रामाबाई मौजूद होती तो मेरी यह हालत न होती। मुझे पत्नी का अभाव बहुत खल रहा है।"

"आप चिन्ता मत कीजिए। इसका उपाय मेरे पास है।"

"क्या ?"

"मै आपकी पूरी तरह सेवा करूगी।"

"कब तक ?"

"जीवन भर !"

"जीवन भर ?"

"हा, जीवन भर !"

"आपने तो मुझे चौंका दिया है।"

"मैं सच कह रही हू !"

"क्या ?"

"मैंने फैसला कर लिया है कि आपको अपना जीवन-साथी बना लूगी !"

"ऐं !"

"हा, आज से आप मेरे पति है !"

"यह मैं क्या सुन रहा हू सविता ?"

"आप सच सुन रहे हैं !"

"सच ?"

"हा सच ! हम दोनो कल ही अदालत म चलकर कोर्ट-मैरिज कर लेंगे !"

अम्बेडकर को ऐसा लगा कि वे काई सपना देख रहे हैं। उन्होंने यशवन्त राव को बतलाया तो वह सुनकर बहुत खुश हुआ।

दूसरे दिन लेडी डाक्टर शारदा कबीर के साथ अम्बेडकर का ब्याह हो गया। दोनो के चित्र अखबारो मे छपे और इस ब्याह की सराहना की गई।

कुछ दिन बाद जब अम्बेडकर स्वस्थ हो गए तो अस्पताल से अपने घर आ गए। लेडी डाक्टर शारदा कबीर उनके साथ आई थीं। वह पत्नी के रूप मे उनकी तन मन और लगन से सेवा करती। इलाज उनका अब भी चल रहा था। बिल्कुल बन्द नहीं हुआ।

हिन्दू कोडबिल

डा० भीम राव अम्बेडकर अच्छे हो गये थे। अब उनका स्वास्थ्य ठीक था। उन्होंने बडे परिश्रम के साथ हिन्दू कोडबिल बनाया। उसे केन्द्रीय विधान परिषद मे सबके सामने पेश किया।

उनका कहना था कि यह हिन्दू कोडबिल है, इसे पढा और समझा जाये। इस पर पूरी तरह विचार किया जाए। इसके बाद इसे लागू कर दिया जाए। इससे हिन्दू जनता का बहुत बडा हित होगा।

इस पर पजाब प्रान्त के लोगो ने विरोध किया। वे कहने लगे कि यह हिन्दू कोडबिल पजाब पर न लगाया जाए।

सिक्ख अपनी बात कहने लगे कि हिन्दू कोडबिल एक धोखा है, एक जाल है। हिन्दुओ के द्वारा सिक्खो को हडप करने की यह एक चाल है।

सरदार पटेल ने भी कहा कि यह हिंदू कोडबिल न्यायसगत नही है।

राष्ट्रपति राजेद्र प्रसाद का कहना था कि मैं इस हिन्दू कोडबिल का कभी समथन नही करूगा।

किन्तु प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू इस पक्ष मे थे कि हिंदू कोडबिल पास कर दिया जाए। उसे जल्दी-से जल्दी हिन्दू जनता पर लागू भी कर दिया जाए।

इसीलिए नेहरू जी का कहना था कि यदि मेरी सरकार ने हिन्दू कोडबिल पास न किया तो मैं अपने प्रधान मन्त्री पद से त्यागपत्र दे दूगा।

डॉ० अम्बेडकर ने हिन्दू कोडबिल को पास करने के लिए बहुत जोर दिया।

तब प० जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि मैं राष्ट्रपति से निवदन करता हू वे हिन्दू कोडबिल पर बहस करवायें।

इस पर राष्ट्रपति राजेद्र प्रसाद ने कहा—"कुछ लोगो का मत है कि सबसे पहले बिल के पहले भाग पर विचार करना चाहिए। जिसमे शादी और तलाक की समस्या है।"

"आप वही कीजिए।"

तभी श्यामा प्रसाद मुखर्जी बोल उठे—"यह बिल हिन्दू धम के विपरीत है। इसका लागू नही किया जा सकता।"

प० मदनमोहन मालवीय न अपना मत प्रगट करते हुए कहा—"ये हिन्दू कोडबिल एक धोखा है।"

इस पर डा० भीम राव अम्बेडकर जब कुछ कहने के लिए खडे हुए। तभी सरदार बल्लभभाई पटेल बोल उठे—"इस बिल से हिन्दुओ का हित कभी नही होगा। इसलिए इसे पास करने की कोई भी आवश्यकता नही है।'

अब बाबू राजेद्र प्रसाद जी की समझ म आ गया। वे सबस कहने लगे, "अगर प० जवाहरलाल नेहरू को यह हिन्दू कोडबिल पास करवाना है तो वे खुशी से पास करवाए। मैं मना नही करता। लेकिन इससे पहले

मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लें। मैं राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दूगा।"

चारो ओर तनाव का वातावरण बन गया। हिन्दू कोडबिल पास नही हो सका। क्योंकि सभी ने उसका विरोध किया था।

अम्बेडकर ने इसे अपना अपमान समझा। उन्हें महान दुख हुआ कि उनके बनाए गए कोडबिल पर कोई भी विचार नही किया गया। उसके लिए उपेक्षापूर्वक कह दिया गया कि यह हिन्दू कोडबिल हिन्दुओं के खिलाफ है। इससे हिन्दुओं का भला कभी नही हो सकता। इसलिए इसे पास न किया जाए।

डॉ० अम्बेडकर ने अपना अन्तिम निणय ले लिया कि वे मत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे देंगे।

बौद्ध धर्म

यद्यपि शारदा कबीर ने पति को बहुत समझाया। लेकिन अम्बेडकर की समझ म कुछ भी नही आया। वे अपनी ही जिद पर अडे रहे। उनका कहना था कि मैंने बडे परिश्रम के साथ हिंदू कोडबिल बनाया था। उसे पढा नही गया, उसे सुना नहीं गया और उस पर कोई भी विचार नहीं किया गया। यह मेरा अपमान है। मैं इस सहन नही कर सकता। इसीलिए कानून मन्त्री के पद से मैं इस्तीफा देता हू। मेरे लिए बहुत जरूरी हो गया है कि अभी और इसी समय त्यागपत्र दे दू।

अम्बेडकर त्यागपत्र लिखन लगे—'मुझे कानून मन्त्री का पद नही चाहिए। मैं इसका त्याग करता हू। मेरा कहना था कि मुझे योजना विभाग का मन्त्री बनाओ, लेकिन मेरी यह बात सुनी नही गई। छुआछूत अब तक नहीं मिट पाई। यह कैसी सरकार है और कैसा इसका प्रबन्ध है?"

आगे अम्बेडकर ने लिखा—"सरकार ने अछूतो के लिए कुछ भी नहीं किया। सभी नेताओं ने मेरे हिंदू कोडबिल का विरोध किया।"

त्यागपत्र लिखकर डॉ० अम्बेडकर ने उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए

ओर फिर शारदा कबीर को पढकर सुनाया।

इसके बाद यह त्यागपत्र प० जवाहरलाल नेहरू के पास भेज दिया। उन्होने उसे पढ़ा, तो बहुत दुख हुआ।

नेहरू जी ने अम्बेडकर को अपने पास बुलाया और उन्हें बहुत समझाया। मगर अम्बेडकर का कहना था कि अब वे किसी भी मन्त्रिमडल मे नहीं रहेंगे।

इस तरह डॉ० भीम राव अम्बेडकर को राजनीति से उपेक्षा हो गई। उन्होने निश्चय कर लिया कि इस राजनीति से एक साथ ही संन्यास ले लेंगे। वे हिन्दू धम का ही त्याग कर देंगे। यह हिन्दू धम उनको समझ मे नही आया और इसने उन्हे कुछ भी नही दिया।

अम्बेडकर का मन कहने लगा कि अहिंसा मे ही शान्ति है। महात्मा गौतम बुद्ध का चलाया हुआ बौद्ध धम सब धर्मों का राजा है। वह शान्ति का एक मात्र प्रतीक है। मैं उसे ही ग्रहण कर लूगा और बौद्ध भिक्षुक बन जाऊगा।

अपने मन की यह बात अम्बेडकर ने शारदा कबीर को भी बतलाई। वह चौंक गइ और सोचने लगी कि अम्बेडकर हिन्दू धम से असन्तुष्ट हो गए हैं।

शारदा कबीर ने पति को समझाने की बहुत कोशिश की। लेकिन अम्बेडकर ने जो इरादा कर लिया था उसे फिर नही बदला।

शीघ्र ही चारो ओर यह समाचार फैल गया कि भीम राव अम्बेडकर बौद्ध धम ग्रहण करने जा रहे हैं।

अम्बेडकर ने कुछ पुस्तको का लिखना आरम्भ कर दिया था। वे अलग-अलग विषय की थी। अभी पूरी नही हो पाई थी।

अम्बेडकर ने अपने नौकर नानकचन्द्र रत्तू से कहा—"रत्तू, इन किताबो को कैसे पूरा किया जाएगा और कौन करेगा।"

"सब होगा, सब किया जाएगा साहब। आप सतोष रखिए।"

"मैं आखिर तक जनता की सेवा ही करता रहूगा, जिसे लोक सेवा कहा जाता है।"

अम्बेडकर को नानकचन्द्र रत्तू की बातो से परम सतोष की अनुभूति हुई ।

नानकचन्द्र रत्तू कहने लगा—"आपने जो पौधा समाज रूपी वन मे लगाया है। वह सीचा जाएगा। उसकी सुरक्षा होगी और एक दिन वह पौधा पेड बनेगा।"

'अच्छा, अब मेरा बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने का समय करीब आ गया है।"

'हा साहब ! इसके लिए 14 अगस्त सन् 1956 ई० का दिन रखा गया है।"

'यह बहुत अच्छा है।"

बौद्ध भिक्षु

अम्बेडकर सबके साथ बौद्ध धर्म ग्रहण करने के लिए चल दिए।

अम्बेडकर, शारदा कबीर, पुत्र यशवन्त राव और नानकचन्द्र रत्तू ये चारो सदस्य नागपुर के लिए बम्बई से हवाई जहाज द्वारा रवाना हो गए।

वहा पहले से ही समाचार पहुच चुका था। इसीलिए हजारो की संख्या मे जनता अपने प्रिय नेता डा० भीम राव अम्बेडकर के दर्शन के लिए उमड पडी।

दीक्षा स्थल पर एक विशाल जनसमूह इकट्ठा हो गया। जिसमे जोर जोर से नारे बुलन्द किए जा रहे थे—'डा० भीम राव अम्बेडकर जिन्दाबाद।' 'अछूतो के मसीहा अम्बेडकर जिन्दाबाद'।

सर्वत्र अम्बेडकर के धर्म परिवर्तन की चर्चा हो रही थी कि उन्होने जीवन भर संघर्ष किया और अब शान्ति चाहते है। इसीलिए बौद्ध धर्म अपना रहे हैं। उनका कहना है कि इस तरह वे लोक सेवा करेंगे। बरसो से सोया पडा बौद्ध धर्म जगायेगे। उसका पूरे भारत मे घूम घूमकर प्रचार करेंगे। वे अब समाज, विधान और सरकार के झझट मे नही पडेगे। अपना

लोक-परलोक बनायेंगे और मानव का भला करेंगे ।

भीड मे भगवान बुद्ध की जय बोली जा रही थी। दीक्षा-स्थल पर चारो ओर सिर-ही सिर दिखलाई पड रहे थे । भीड बढती जा रही थी। इसक दो बहुत बडे कारण थे। सबसे पहला कारण तो यह था कि अम्बेडकर कानून मन्त्री थे। उन्होने भारत का नया सविधान बनाया था। वे अछूतो के नेता थ और उन्होने बहुत ही ऊची शिक्षा पाई थी। इसीलिए जनता की उनमे श्रद्धा थी और वह दशन करने आई थी।

दूसरा कारण यह था कि अम्बेडकर अब बौद्ध धम ग्रहण करने जा रहे थ। उनमे अचानक धम परिवतन की भावना आ गई। यह भी जनता के लिए एक आश्चय का विषय था।

पाडाल खूब सज रहा था। हजारो बौद्ध-ध्वज लहरा रहे थे।

बौद्ध भिक्षु चिन्तामणि ने भीड को सम्बोधित करते हुए मदु स्वर मे कहा—"आप सबसे निवेदन है कृपया शान्त रहे। अब दीक्षा काय आरम्भ होने जा रहा है। इसलिए अपनी-अपनी जगह पर बठ जायें।"

अम्बेडकर बौद्ध भिक्षु के पीले कपडे पहन आसन पर बठे थे। बौद्ध भिक्षु चिन्तामणि उनके सामने आकर बठ गए।

पहले अम्बेडकर का सिर मुडित हुआ। फिर स्नान के बाद उन्हे श्वेत वस्त्र दिए गए। चिन्तामणि ने उनके हाथ मे भिक्षा पात्र दे दिया।

इसके बाद वे दीक्षा देने का आयोजन करने लगे। उन्होने अम्बेडकर से पूछा—"तुम्हे किसी वस्तु, प्राणी या स्थान का मोह तो नही है ?"

"नही।"

'तुमने ससार से नाता तोड दिया है।'

'हा, मैं ससार से विरक्त हो गया हू।"

'तुम्हारे मन मे कोई इच्छा तो नही है ?"

"नही।

"तो तुम बौद्ध धम स्वीकार करने के लिए पूरी तरह तैयार हो ?"

हा, मैं बिल्कुल तैयार हू।"

"तुम सत्य का पालन कर सकोगे ?"

"सत्य मेरी मा है।"

"तुम कटुवाणी सह सकोगे ?"

"मेरे लिए अब संसार मे कुछ भी कटु नही रहा।"

"तुम सवथा दीक्षा के योग्य हो। मैं तुम्हे अभी दीक्षा देता हू।'

जब चिन्तामणि ने यह कहा तो भीड मे जोर से तालियां गडगडा कर बज उठी।

दीक्षा

अब बौद्ध भिक्षु चिन्तामणि ने अम्बेडकर को दीक्षा देना आरम्भ किया। उनके मुह से निकला—

"बुद्ध शरण गच्छामि।"
"सघ शरण गच्छामि।"
"धम शरण गच्छामि।"
'बुद्ध शरण गच्छामि।"

बौद्ध भिक्षु चितामणि जो कहते अम्बेडकर उसी को दोहरात। सभा मे सन्नाटा छा रहा था। सभी लोग मौन थे, प्रसन्न थे और दीक्षा समारोह देख रहे थे।

पहली बार अम्बेडकर ने दीक्षा के वाक्य दोहराए। दुबारा भी वे उनका उच्चारण करत रहे। अब चितामणि कहने लगे—

"ततियपि बुद्ध शरण गच्छामि।"
"ततियपि धरम शरण गच्छामि।"
'ततियपि सघ शरण गच्छामि।"

इसके बाद चितामणि ने अम्बेडकर से कहा—"तुम्ह बाईस प्रतिज्ञाए करनी पडेंगी अम्बेडकर।"

"आपकी आज्ञा का पालन होगा भगवन् ।"

"तुम्हारा पहला कर्तव्य यह होगा कि ब्रह्मा, विष्णु को ईश्वर कभी नही मानोगे।"

"और दूसरी ?"

"राम और कृष्ण को भी ईश्वर नही माना जाएगा।"

"और तीसरी भगवन् ?"

"गौरी, गणपति, देवी और देवता का चक्कर छोड देना होगा।"

"छोड दूगा भगवन् ।"

'अब चौथी प्रतिज्ञा सुनो कि जीवन भर किसी भी देवता का पूजन नहीं करोग।"

"नही करूगा भगवन् ।"

"और सुनो।"

"क्या ?"

"जितने भी अवतार हुए हैं उन पर विश्वास नही करोगे।'

"समझ म आ गया भगवन् ।"

"अब आग सुनो।"

'क्या ?"

"हिदू धम का प्रचार नही करोगे।"

"जी।"

"हिदू धम झूठा है। उसमे पागलपन है। बौद्ध धम ही एक धम है। जो मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाता है इसी धम का पालन करोग।'

"करूगा।"

"पितरा का श्राद्ध कभी नही करोगे और न उनको पिण्डदान दोग।'

"यह प्रतिज्ञा भी मैं करता हू।"

"बौद्ध धम की निदा कभी नही करोगे। न कोई ऐसे काम करोगे जो उस धम के विरुद्ध हो।'

"इसका ध्यान रखूगा।'

"सभी जीवो पर दया करोग और अहिसा तुम्हारा महान व्रत होगा।"

"हमेशा सच बोलोगे। विचार नही करोगे। चोरी से भी दूर रहोगे।"

"बिल्कुल ठीक है भगवन्।"

"ब्राह्मणों से कभी क्रियाकर्म नही करवाओगे। हर मनुष्य को एक समान समझोगे और एक ही दृष्टि से देखोगे।"

इस तरह बौद्ध भिक्षु उत्तमस्थविर प्रतिज्ञा पर प्रतिज्ञा करवाते चले आ रहे थे। अम्बेडकर सिर झुकाकर सभी कुछ स्वीकार कर रहे थे।

"मास और मछली कभी नही खाओगे।"

"नही खाऊगा।"

"महात्मा बुद्ध पर अपना जीवन निछावर कर दोगे।"

"कर दूगा।"

जब अम्बेडकर ने यह अंतिम प्रतिज्ञा की तो सभा मे तालिया जोर जोर से गडगडाकर बजने लगीं।

अपने घर बम्बई मे

डॉ० भीम राव अम्बेडकर जब बौद्ध भिक्षु बन गये थे। वे जहाज पर बैठे और डा० शारदा कबीर तथा सेवक नानकचन्द रत्तू के साथ नागपुर से बम्बई आ गये।

देश के समाचार पत्रो मे ही नही विदेशी अखबारो मे भी यह खबर मोटे मोटे अक्षरो मे छपी थी कि अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया है। उन्होने मन्त्रिमण्डल से त्याग पत्र दे दिया। बौद्ध भिक्षु बन गये। उनका शरीर भी स्वस्थ नही रहता।

अम्बेडकर को मधुमेह की बीमारी थी वह बहुत पुरानी हो चुकी थी। उसका न जाने कितना इलाज किया गया मगर बीमारी खत्म नही हुई।

यही कारण था कि वे दिन-पर दिन दुबले और दुबले होते चले जा रहे थे। न तो उन्हे भूख लगती और न कुछ खाते। जो कुछ खा लेते, वही हजम

नहीं होता। कमजोरी इतनी ज्यादा बढ़ गई थी कि उन्हें चलने फिरने मे तकलीफ होती।

उनकी पत्नी शारदा कबीर लेडी डॉक्टर थी। वे पति का आवश्यकता से अधिक ध्यान रखती। वे इस निष्कर्ष पर पहुच चुकी थी कि यह बीमारी कभी बिल्कुल ठीक नहीं हो सकती है। इसका बीमार दवा खाता रहे, इजेक्शन लगवाता रहे। फिर उसे ज्यादा तकलीफ नही होगी।

यशवन्त राव को भी पिता की बीमारी की बहुत अधिक चिन्ता थी। वह अपनी विमाता शारदा कबीर से यही कहा करता कि मा, पिताजी को अस्पताल में भर्ती कर दिया जाये। यह ज्यादा अच्छा रहेगा।

इस पर शारदा कबीर हस देती और यशवन्त राव को समझाती हुई स्नेह भरे स्वर में कहने लगती—'इनका जो इलाज अस्पताल में होगा। वही मैं घर पर कर रही हू। वहा ले जाने से कोई फायदा नही बल्कि इनको परेशानी होगी।"

यशवन्त राव चुप हो जाता। उसके पिता अब बूढ़ हो गये थे। उनके शरीर ने भी जवाब दे दिया। वे चलने फिरने में भी असमर्थ हो गये।

यशवन्तराव पिता की अधिक-से-अधिक सेवा करता। वह उनका बदन दबाता। उनके सिर पर तेल की मालिश करता।

यशवन्त राव यह भी देख रहा था कि माता शारदा कबीर रात को सोती नही। वे पिताजी के पास कुर्सी पर बैठी रहती हैं। समय पर दवा देना और हर तीन घण्टे बाद थर्मामीटर लगाकर यह देखना कि ज्वर कितना है। उसे चार्ट में लिखना।

यशवन्त राव यह भी देख रहा था कि शारदा कबीर अम्बेडकर के परहेज पर बहुत अधिक ध्यान दे रही हैं।

यशवन्त राव शारदा कबीर के प्रति श्रद्धा से भर जाता। जब वह देखता कि उसकी विमाता पिता की देह दबा रही है।

नौकर नानकचन्द्र रत्तू सच्चा स्वामिभक्त था। वह अधिकांश अपने मालिक के पास ही बैठा रहता और उनके लिए मन-ही मन ईश्वर से विनय करता रहता कि भगवान उन्हें लम्बी उम्र दें।

इस तरह अम्बेडकर का परिवार उनकी बीमारी से दुखी था। सभी

की चिन्ता थी। सभी खूब सेवा करते। सबको उनसे श्रद्धा थी और वास्तव में वे श्रद्धा के प्रतीक थे।

अम्बेडकर बिस्तर से [illegible] गये। अब वे बहुत शिथिल हो गये थे। पत्नी शारदा कबीर की यही राय थी कि वे अधिक-से-अधिक आराम करें। आवश्यकता पडने पर ही बोलें। ऐसे ही अगर बहुत जरूरी हो, तो उठकर बैठें।

अम्बेडकर की मृत्यु

नानकचन्द्र रत्तू ने बैठे हुए अम्बेडकर को लिटा दिया। वह विनयी स्वर मे कहने लगा—"आपको अपने बुद्ध भगवान की कसम मालिक बाबू। आप बैठा मत कीजिये। आपकी सास फूलने लगती है। डॉक्टर मालविन का कहना है कि आप ज्यादा-से ज्यादा आराम करें।"

"रत्तू अब तू मुझे डाटने लगा है।"

"नही मालिक।"

अम्बेडकर मुस्कराये और फिर स्नेह भरे स्वर मे कहने लगे—' रत्तू, तू मुझ पर अपना अधिकार समझता है। तू प्यारा ही नही बहुत प्यारा है। इसीलिए तू मेरी आखो का तारा बन गया है।"

लेडी डॉक्टर शारदा कबीर कमरे मे प्रवेश कर रही थीं। उन्होंने पति की बात सुन ली तो हसकर कहने लगीं—"मैं डाक्टर हू और रत्तू कपाउडर हो गया है। मैं यही कहती हू। यहा चिल्लाती हू कि अकारण शरीर को तकलीफ मत दो।"

नानकचन्द्र रत्तू अम्बेडकर की देह दबाने लगा। तभी शारदा कबीर ने उसकी छुट्टी कर दी। वह कहने लगी—"अब तुम जाओ रत्तू, यह सब मैं कर लूगी।'

'आप।"

"हा मैं।"

स्तू ने अभिवादन किया और वहा से चला गया। शारदा ने सारी रात जागकर व्यतीत कर दी। रात-भर अम्बेडकर को बहुत ज्यादा उलझन रही।

प्रात उनकी आख लग गई। डॉ० शारदा कबीर ने देखा कि वे सो रहे हैं। इसीलिए नीति श्रम से निवत्त होने चली गयी।

जब शारदा कबीर थोडी देर मे लौट आई तो पाया कि अम्बेडकर की मृत्यु हो गई है।

शारदा कबीर पति के शव से लिपट गइ और फूट फूटकर रोने लगी।

यशवन्त राव भी सुनते ही दौडा आया। वह पिता की मृत्यु देह से लिपट गया। नौकर नानकचन्द्र स्तू बिलख बिलखकर रो रहा था।

इस समय डॉ० भीम राव अम्बेडकर देहली मे थे। उनकी मत्यु का समाचार पूरे नगर मे फैल गया। राजधानी क बडे-बडे नेता उनके अन्तिम दशन के लिए आ गये। उनकी अर्थी बनी। उस पर फूल चढ़ाये गये। फिर उनके शव को हवाई जहाज से बम्बई ले जाया गया।

बम्बई नगर के बाजार बन्द हो गये थे। अम्बेडकर के शव को पूरे नगर म घुमाया गया। लाखो की भीड थी और वह बढ़ती ही चली जा रही थी।

अर्थी श्मशान पर आ गयी। यशवन्त राव ने चिता मे आग लगाई। देखते-ही-देखते चिता धू धू करके ऊची ऊची लपटो मे जलने लगी।

इस तरह अछूतो का मसीहा चला गया। स्वतन्त्र भारत का नया सविधान बनाने वाला भीम राव अम्बेडकर दुनिया से विदा हो गया।

अम्बेडकर दलित वग के नेता थे। वे उच्च शिक्षा प्राप्त थे। उन्हे पूरे ससार के कानून का बहुत अच्छा ज्ञान था। वे देश-सेवक, लोक-सेवक, राष्ट्र-भक्त और दलितो के भगवान थे। वे ससार के एक महान पुरुष थे। उनका अभाव हमेशा खलता रहेगा। उन्होने युग को एक नयी चेतना दी और सभी को एक डार मे बाधने की पूरी-पूरी कोशिश की। ससार उनका आभारी रहेगा। वह उनसे हमेशा प्रेरणा लेता रहेगा। वे प्रेरणा के प्रतीक थे।